Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-33
कल्पादि सम्वत् 1972949118
सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा
दिनांक 31 अक्टूबर से 06 नवम्बर 2018 तक
कार्तिक कृष्ण सप्तमी से कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी 2075 तक
वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

धर्म का प्रतीक... पृष्ठ- 2
राफेल सौदे का.... पृष्ठ- 3
महाभारत काल के... पृष्ठ- 5
बाहें पसारता हिन्दू.. पृष्ठ- 8
विपक्ष में पीएम... पृष्ठ- 12

मंगलमय हो दीप पर्व

दीपावली की ज्योतिर्मय रश्मिया समग्र विश्व का कोना-कोना आलोकित करें, कृषक का आंगन हो या श्रमिक की झोपड़ी वह प्रकाश के अखण्ड साम्राज्य से प्रकाशित हो जायें, कोई भी समृद्धि और आनन्द की दृष्टि से वंचित न हो, सम्पूर्ण मानवता पर परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा हो। विश्व प्रेम, सौहार्द्र और बंधुत्व का मनोहारी मन्दिर बनें। इस दीपावली पर हिन्दुत्व का प्रकाश जन-जन के हृदय को सात्विकता के आलोक से प्रदीप्त कर दे, हमारी यही कामना है और हमारा यही प्रयास है।

चन्द्रप्रकाश कौशिक — राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा — राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी — राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते।।
नमस्ते गरुड़रूढ़े कालासुर भयंकरी। सर्व पाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते।।
सर्वस्वरूपे वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुःख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते।।

अमृतसर ट्रेन हादसा जिम्मेदार कौन

हादसे के लिये रेल विभाग जिम्मेवार–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

गत दिनों पूर्व हुए अमृतसर ट्रेन हादसे ने सरकारी दावे की कलई खोल कर दिया है। इस हादसे ने भारतीय रेलवे का एक ऐसा सच सामने ला दिया है,

जो हर किसी के लिए आश्चर्यजनक होगा। वहीं यह ५६ मौतों का एक बड़ा कारण भी हो सकता है। वे जिंदगियां बच सकती थीं, अगर ऐसा न होता। रेलवे के कुछ अधिकारियों और कर्मचारियों ने हजारों लोगों की सुरक्षा दांव पर लगा रखी है।अखिल भारत हिन्दू महासभा ने जहाँ मृतकों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की है वहीं रेल विभाग के प्रति रोष जाहिर किया है। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि रेल विभाग सुरक्षा के प्रति गंभीर नहीं हैं। रेल मंत्री सुरक्षा की गांरटी प्रदान करें। अमृतसर में जिस जगह यह हादसा हुआ, वहां टैक्स चोरों की सहूलियत की खातिर दीवारों की मरम्मत नहीं कराई गई हैं और न ही गलियां बंद कराई गई हैं। यही कारण है कि आसपास के लोग आसानी से दशहरे वाले दिन पटरी पर पहुंच गए थे। रोजाना जौड़ा फाटक से करीब ३० ट्रेन अप डाउन करती हैं। अमृतसर आने वाली अधिकतर ट्रेन की स्पीड मानावाला स्टेशन से कम होनी शुरू हो जाती है। ट्रेन शिवाला फाटक, जौड़ा फाटक पर आकर,इस कदर धीमी हो जाती है कि कोई आसानी से सामान उतार चढ़ा सकता है। शेष पृष्ठ 11 पर

धर्म का प्रतीक है—'शंख'

✍ आचार्य पं. शशिमोहन बहल

धर्मग्रंथों में शंख को विजय, सुख–समृद्धि के साथ–साथ यश देने वाला भी बताया गया है। तांत्रिक–पूजा के दक्षिणावर्ती शंख का विशेष महात्म्य है। 'अथर्ववेद' के चौथे कांड में 'शंखमणि सूक्त' के अंतर्गत शंख की महिमा का वर्णन है। शंख को रक्षक, अज्ञान और निर्धनता को दूर करने वाला, आयुवर्द्धक तथा राक्षसों और भूत–प्रेतों को दूर करने वाला कहा गया है।

आध्यात्मिक दृष्टि से तो शंख का महत्त्व है ही, अब वैज्ञानिकों ने भी इसके महत्त्व को स्वीकार कर लिया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि शंख की ध्वनि जहाँ तक जाती है, वहाँ तक के विषाणु या तो नष्ट हो जाते हैं या मूर्च्छित हो जाते हैं। शंख फूंकने से फेफड़े मजबूत होते हैं और हृदय संबंधित कोई रोग भी नहीं होता। बांझपन से ग्रस्त स्त्री अगर नियमित रूप से इसमें भरे जल का सेवन करे तो उसके संतानवती होने की संभावना प्रबल होती है।

'महाभारत' में युद्ध के आरंभ, युद्ध के समाप्त होने आदि अवसरों पर शंख–ध्वनि करने का वर्णन आया है। इसके साथ ही पूजा, आरती, कथा, धार्मिक अनुष्ठानों आदि के आरंभ व अंत में भी शंख–ध्वनि करने का विधान है। इसके पीछे धार्मिक आधार तो है ही, वैज्ञानिक रूप से भी इसकी प्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है। इस मामले में वैज्ञानिकों का मानना है कि सूर्य की किरणें शंख–ध्वनि के प्रभाव में बाधक होती हैं। अतः प्रातः व सायंकाल में जब सूर्य की किरणें निस्तेज होती हैं तभी शंख–ध्वनि करने का नियम है। इससे पर्यावरण शुद्ध रहता है।

'अथर्ववेद' के अनुसार 'शंखेन हत्वा रक्षांसि' अर्थात् शंख से सभी राक्षसों का नाश होता है और 'यजुर्वेद' के अनुसार 'अवरस्परायशंखध्वम्' अर्थात युद्ध में शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिए शंख फूंकने वाला व्यक्ति आवश्यक है। 'यजुर्वेद' में ही यह भी कहा गया है कि 'यस्तु शंखध्वनि कुर्यात्पूजाकाले विशेषतः वियुक्तः सर्वपापेन विष्णुनां सह मोदते' अर्थात् पूजा के समय जो व्यक्ति शंख–ध्वनि करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार शंख फूंकने वाले को सांस से संबंधित रोग, जैसे दमा, फेफड़े आदि के रोग नहीं होते। रुक–रुक कर बोलने व हकलाने वाले अगर नित्य शंख–जल का पान करें, तो उन्हें लाभ मिल सकता है। वास्तव में मूकता व हकलापन दूर दूर करने के लिए शंख–जल एक उपयोगी औषधि है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के अनुसार शंख में जल भरकर देवस्थान में रखने और इसे घर के आसपास छिड़कने से वातावरण शुद्ध रहता है। इसके अतिरिक्त शंख में रखे जल से प्रभु को स्नान कराकर अगर कोई गर्भवती स्त्री उसका पान करे तो उससे कभी भी मूक बालक जन्म नहीं लेता।

धार्मिक अनुष्ठानों के पश्चात् वहाँ उपस्थित लोगों पर शंख में रखा हुआ जल क्यों छिड़का जाता है? उसका उत्तर है कि शंख में गंधक, फास्फोरस एवं कैल्शियम जैसे पदार्थ काफी मात्रा में रहते हैं अतः शंख में जल रखकर कुछ समय तक छोड़ देने से इसमें रखा जल रोगाणुरहित हो जाता है। यही कारण है कि वह जल लोगों के ऊपर छिड़का जाता है। 'गौरक्षा संहिता', 'विष्वामित्र संहिता', 'पुलस्त्य संहिता' आदि ग्रंथो में दक्षिणावर्ती शंख की महिमा बताई गई है। इस शंख को दरिद्रतानाशक, आयुवर्द्धक, समृद्धिदायक कहा गया है। दक्षिणावर्ती शंख जिसके घर में रहता है, वहाँ लक्ष्मी स्वयं निवास करती हैं। जो व्यक्ति दक्षिणावर्ती शंख की चंदन और देसी कपूर से पूजा करता है, वह सौभाग्यशाली बन जाता है। जो व्यक्ति प्राण–प्रतिष्ठा युक्त दक्षिणावर्ती शंख अपने घर में स्थापित करता है, निर्धनता उससे कोसों दूर भाग जाती है और भाग्य में वृद्धि होती है। इस शंख की महिमा और गुणों के संदर्भ में 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' में कहा गया है—शंख, चंद्र और सूर्य के समान है, इसके मध्य में वरूण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा तथा अग्र भाग में गंगा और सरस्ववती का निवास है। तीनों लोकों में जितने भी तीर्थ हैं, विष्णु–आज्ञा से शंख में निवास करते हैं। शंख–दर्शन मात्र से सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। हमारे ऋषि–मुनि दूरद्रष्टा के साथ–साथ तत्वद्रष्टा भी थे। उन्होंने इस शंख के तत्त्व की अद्भुत शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस समय कुछ लोगों की योग्यता पर सवाल उठेंगे। लक्ष्य छलावा साबित होंगे। आपके द्वारा लिये गये निर्णय ही आपकी सफलता है। स्थितियाँ आपके पक्ष में होंगी। सम्बन्धों में नयी ऊर्जा का संचरण होगा। आवेश में आकर कोई ऐसा कदम न उठायें जिसके लिए बाद में पछताना पड़े।

वृष : इस सप्ताह नकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों से उचित दूरी बनायें रखें अन्यथा आप भी प्रभावित हो सकते है। अति–उत्साह में आकर कार्य न करें। प्रेम के मामलें में स्थितियाँ सामान्य रहेंगी। अकेलेपन को अकेले रहकर ही दूर किया जा सकता है।

मिथुन : इस समय अलोचना के बावजूद भी संयम बनायें रखने की कोशिश करें। आपके विचारों की शीघ्र ही विजय होगी। अन्याय के प्रति सक्रियता एक दिन रंग लायेंगी। समाज के लोगों में आपकी धाक बनेगी। अधिक बोलने की बजाय थोड़ा बोलने की आदत डालें।

कर्क : इस वक्त आप गलतियां न दुहराने के प्रति कटिबद्ध बनें रहने का प्रत्यन करें। नौकरी व व्यावसाय में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कुछ लोग स्थानान्तरण को लेकर चिन्तित रह सकते है। भाग्यवश कुछ ऐसे कार्य होंगे जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

सिंह : आप परिवर्तन के दौर से गुजरेंगे। कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। नयी नौकरी वाले लोग अपने कार्य में लापरवाही न करें अन्यथा लेने के देने पड़ सकते है। अत्यधिक व्यस्तत आपके वैवाहिक जीवन में खलल डाल सकती है।

कन्या : कुछ लोगों के लिए कड़ी चुनौतियों का दौर चल रहा है। अपनी साख बनायें रखने के लिए तमाम प्रकार की बाधाओं को झेलना पड़ सकता है। कुछ ईर्ष्यालू लोग ही आपकी योजनाओं को खण्डित करने का प्रयास करेंगे। परिवार में कलहपूर्ण माहौल रह सकता है।

तुला : आप जीवन के महत्वपूर्ण पड़ाव पर है। मिलने वाले प्रतिरोध से सीख लेने की आवश्यकता है। बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय, काम बिगाड़े आपनों जग में होय हसाय। अतः आप सोंच–समझकर ही निर्णय लें तो बेहतर रहेगा। धन के लेन–देन में सावधानी बरतें।

वृश्चिक : इस सप्ताह शारीरिक शिथिलिता महसूस होगी। नकारात्मक विचारों को अपने ऊपर हावी न होनें दें। अपनी योजना को बदलने के बजाय उस पर सारी ऊर्जा से कार्य प्रारम्भ कर दें। नये उत्तरदायित्वों को संभालने के लिए आप अभी परिपक्व नहीं है।

धनु : इस सप्ताह मिलने वाले हर अवसर को उचित ढ़ंग से दोहन करने की जरूरत नजर आ रही है। आर्थिक परिस्थितियों में पहले की अपेक्षा मजबूती आयेगी। साख बरकरार रहेगी किन्तु मजबूत मित्र दूर हो सकते है। काम–धन्धें के प्रति अपना ध्यान केन्द्रित करें।

मकर : काम आपके मन मुताबिक न होने से काम में तेजी नहीं आ पायेगी। कार्यक्षेत्र व प्रेम में गलतियों का खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। अपनी छवि को बरकरार रखने के लिए कठिन संघर्ष करने की जरूरत है। विरोधी आपकी आलोचना करेंगे ऐसे में आपको अडिग बने रहना है।

कुम्भ : इस सप्ताह कुछ लोगों के यश, सम्मान आदि में वृद्धि होने के संकेत नजर आ रहें है। कुछ सुनहरे अवसर आपको घेरे रहेंगे किन्तु निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। कार्यक्षेत्र को लेकर मन में नयी रणनीतियाँ उत्पन्न होगी।

मीन : भावुकता से उबरने का प्रयास सार्थक सिद्ध होगा। सुस्त पड़े काम पुनः प्रारम्भ होंगे। आर्थिक दिक्कते पहले की अपेक्षा कुछ कम होगी। परिजनों के साथ हर्षोल्लास में समय व्यतीत होगा। अकारण दोषारोपण का शिकार हो सकते है, अतः सावधानी बरतें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्त सततं भव।।

सब कर्मों को मन से मुझ में अर्पण करके तथा समबुद्धिरूप योग को अवलम्बन करके मेरे परायण और निरन्तर मुझ में चित्तवाला हो।।५७।।

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।।

उपर्युक्त प्रकार से मुझ में चित्त वाला होकर तू मेरी कृपा से समस्त संकटों को अनायास ही पार कर जायेगा और यदि अहंकार के कारण मेरे वचनों को न सुनेगा तो नष्ट हो जायेगा अर्थात् परमार्थ से भ्रष्ट हो जायेगा।।४८।।

यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्याति।।

जो तू अहंकार का आश्रय लेकर यह मान रहा है कि 'मैं युद्ध नहीं करूँगा' तो तेरा यह निश्चय मिथ्या है; क्योंकि तेरा स्वभाव तुझे जबर्दस्ती युद्ध में लगा देगा।।५६।।

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्तोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्।।

हे कुन्तीपुत्र! जिस कर्म को तू मोह के कारण करना नहीं चाहता, उसको भी अपने पूर्वकृत स्वाभाविक कर्म से बँधा हुआ परवश होकर करेगा।।६०।।

हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 31 अक्टूबर से 06 नवम्बर 2018 तक

अध्यक्षीय

राफेल सौदे का सच

राफेल सौदे को लेकर पिछले कुछ दिनों से हंगामा मचा हुआ है। लेकिन राफेल का सच क्या है? कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अलग–अलग ट्वीट में इस घोटाले के आकार के बारे में अलग–अलग बातें कर रहे हैं। १६ मार्च २०१८ को ट्वीट में उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्री के झूठ का पर्दाफाश कर दिया है और अपनी रिपोर्ट में राफेल की कीमत बताई है। जिसके मुताबिक कतर को १३१६ करोड़, मोदी सरकार को १६७० करोड़ और मनमोहन सिंह सरकार को ५७० करोड़ रुपये में देने की बात है। राहुल के मुताबिक हर हवाई जहाज पर ११०० करोड़ रुपया ज्यादा दिया गया जो कि ३६ विमान के हिसाब से छत्तीस हजार करोड़ रुपया है जो रक्षा बजट का दस फीसदी है। इसके बाद दूसरे ट्वीट में राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि राफेल सौदे की वजह से सरकारी खजाने को चालीस हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। कुछ उन्होंने इसे ५८ हजार करोड़ रुपये का घोटाला बताया। हाल ही में उन्होंने अपने एक ट्वीट में इसे एक लाख तीस हजार करोड़ रुपये का घोटाला बताया। सरकारी सूत्रों के मुताबिक यूपीए के वक्त राफेल का कोई सौदा हुआ ही नहीं। कीमतों की तुलना करने पर भी अगर सिर्फ हवा में उड़ने लायक लड़ाकू विमान की कीमत की बात करें, जिस पर कोई भी मारक हथियार, रडार या दूसरे आयुध सिस्टम नहीं लगे हैं, तो सबसे पहले यूपीए–एक के समय राफेल के सौदों पर चर्चा शुरू हुई जिसमें अकेले विमान की कीमत ५३८ करोड़ रुपये थी। मई २०१५ में यूपीए के लिए यही कीमत ७३७ करोड़ रुपये प्रति विमान होती जबकि एनडीए ने ६७० करोड़ रुपये में सौदा किया। सितंबर २०१६ में जब पहला विमान आएगा तब यूपीए के सौदे के हिसाब से कीमत ६३८ करोड़ रुपये होती जबकि एनडीए के सौदे के हिसाब से यह ७६४ करोड़ रुपये बैठेगी।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

दूसरा आरोप है कि ३६ राफेल लड़ाकू विमानों का सौदा करते समय भारत की अपनी सरकारी कंपनी हिंदुस्तान एयरोन टिक्स लिमिटेड को नजरअंदाज कर दिया गया सरकारी सूत्रों के अनुसार दसां एविएशन और एचएएल के बीच बात नहीं बनी। दोनों पक्षों के बीच टेक्नॉलाजी ट्रांसफर एक बड़ा मुद्दा था। साथ ही दसां एविएशन भारत में बनने वाले १०८ लड़ाकू विमानों की गुणवत्ता नियंत्रण की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं था। दसां एविएशन भारत में विमान बनाने के लिए तीन करोड़ मैन आवर का अंदाजा था तो वहीं एचएएल का आकलन इससे कहीं तीन गुना अधिक था जिससे कीमत कई गुना ज्यादा हो जाती। ऐसे अनसुलझे मुद्दों के चलते ही यह सौदा बरसों से लटका हुआ था। तीसरा आरोप लगाया गया कि मोदी सरकार एचएएल की अनदेखी कर रही है। इस पर सरकारी सूत्रों का कहना है कि यूपीए के वक्त किए जा रहे सौदे में भी एचएएल को शामिल नहीं किया गया था। यूपीए के वक्त तैयार विमान खरीदने की बात थी और बाकियों को भारत में बनाने की। लाइसेंस लेकर बनाने में और टेक्नॉलाजी ट्रांसफर में फर्क है। भारत में बनाने से कीमत अधिक आती। यूपीए के वक्त भी एचएएल को लेकर चल रही बातचीत किसी नतीजे पर नहीं पहुंची थी। एचएएल को यूपीए के वक्त हर साल औसत तौर पर दस हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर दिए गए। जबकि मोदी सरकार ने हर साल औसत २२ हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर दिए। ८३ लाइट काम्बेट एयरक्राट बनाने का पचास हजार करोड़ का ऑर्डर भी मोदी सरकार ने एचएएल को दिया है, उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने का प्रयास हो रहा है। चौथा आरोप है कि मोदी सरकार ने अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस डिफेंस इंडस्ट्रीज की मदद की और इसे राफेल के निर्माता दसां एविएशन से ऑफसेट कांट्रेक्ट दिलवाया इस पर सरकारी सूत्रों का कहना है कि ऑफसेट का नियम यूपीए ने २००६ में बनाया था। ऑफसेट के लिए सिर्फ एक कंपनी नहीं है। दसां एविएशन के मुताबिक उसने ७२ भारतीय कंपनियों से करार किया है। छोटी बड़ी कंपनियों को तीन अरब यूरो से अधिक का काम मिलेगा। इससे रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। जहां तक रिलायंस डिफेंस इंडस्ट्रीज का सवाल है सरकारी सूत्रों के अनुसार तब भी दसां एविएशन और रिलायंस के बीच करार हुआ था बाद में हुए समझौते के तहत रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के ५१ फीसदी और दसां एविएशन के ४६ फीसदी भागीदारी के साथ साझा उपक्रम बनाया गया। दसां और रिलायंस मिलकर नागपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नजदीक मिहान एसईजेड में एक संयंत्र स्थापित कर रहे हैं। इसके लिए दसां एविएशन ने सौ मिलियन यूरो का निवेश किया है जो भारत में किसी एक जगह पर रक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा निवेश है। वहां रफाल और फाल्कन विमानों के लिए फाइनल एसेंबली बनाई जाएगी।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

स्त्री चरित्र पर संदेह

भारत में अभी भी पुरूषवादी विचारधारा हावी है। भारतीय समाज में पढ़ी–लिखी, तेज–तर्रार स्त्रियों को कुछ संदेह और शिकायत से देखने का चलन है जैसे ये स्त्रियां आदर्श भारतीय नारी के लिए खींची गई लक्ष्मण रेखा के पार जाकर कोई गुनाह करती हों। वे आदर्श मां, आदर्श पत्नी, आदर्श बहन से आगे जाकर कामकाजी और महत्वाकांक्षी स्त्रियों में बदल रही हैं और इसकी वजह से भारतीय विवाह संस्था और परिवार की चूलें हिल रही हैं। पढ़–लिख कर आगे बढ़ने की कामना रखने वाली ऐसी स्त्रियां कुछ भी करने को उतारू हो सकती हैं या उनके साथ कुछ भी किया जा सकता है यह बात भी कहीं किसी अवचेतन में भारतीय पुरुष के भीतर दर्ज है। तो ये नौकरी करने वाली, अकेले घूमने वाली, कला, साहित्य या राजनीति की सीढ़ियों पर तेजी से चढ़ने वाली लड़कियां हमारे अवचेतन में पहले से ही गुनहगार हैं, इसलिए जब वे अपनी शिकायत रख रही हैं, तो पहला सवाल हमारे दिमाग में यही आ रहा है कि उन्होंने यह सब तब क्यों नहीं कहा, जब उनके साथ यह उत्पीड़न हो रहा था। तब वे पद, प्रतिष्ठा या दूसरी लिप्सा में घिरी रह गई और अब फिर शोहरत के लिए यह शोर कर रही हैं। इसी के साथ हम यह भी मान लेते हैं कि MeToo जैसी मुहिमें दरअसल पश्चिम से आती हैं। कुछ फैशनेबल किस्म की महिलाओं का खेल है और इससे शरीफ लड़कियों को दूर रहना चाहिए। जबकि हम यह समझने को तैयार नहीं हैं कि अपने घर–परिवार पीछे छोड़कर, अपने सगे–संबंधियों की नाराजगी और आपत्तियों को दरकिनार कर, चुप रहने और अत्याचार सहने की अपनी बरसों पुरानी ट्रेनिंग को फलांगकर जब ये लड़कियां किसी दफ्तर में आती हैं, तो वे दरअसल सहमी हुई ही होती हैं। उन पर हुआ हल्का–सा हमला भी उनके पांव उखाड़ देता है. उन्हें पता होता है कि वे ऐसे हमले की शिकायत भी करेंगी, तो दफ्तर हमलावर पर बाद में कार्रवाई करेगा, घर वाले पहले उनकी नौकरी छुड़ाएंगे। ऐसे हमलों के लिए वे खुद जिम्मेदार मानी जाएंगी उनके कपड़ों, उनके हावभाव, उनके चाल–चलन पर सवाल उठेंगे, यह पूछा जाएगा कि अपने सहकर्मियों से वे घुल–मिलकर उन्होंने बात क्यों की, उनको यह समझने का अवसर क्यों दिया कि उनसे छूट ली जा सकती है। सच तो यह है कि भारतीय समाज में लालन–पालन की विडम्बनाओं ने स्त्री–पुरुष के बीच सहज संबंध रहने ही नहीं दिया है। इस समाज में आदर्श व्यवहार की कुछ बनी हुई कसौटियां हैं विश्वविद्यालयों, दफ्तरों या दूसरे कार्यस्थलों में लेकिन जब यह रेखा मिटती है, जब नौकरी या शिक्षा की मजबूरी में स्त्री–पुरुष करीब आते हैं, तो अक्सर दोहरी दुविधा दिखाई पड़ती है। बहुत सारे लड़के लड़कियों से एक सतर्क दूरी बरतते हैं, जैसे उनके करीब जाना भी उनके चरित्र पर दाग लगा देगा। बहुत सारी लड़कियां भी लड़कियों के बीच ही अपना सुरक्षित कोना खोज लेती हैं और पुरुष संसर्ग से खुद को दूर रखती हैं। लेकिन धीरे–धीरे जब हम पाते हैं कि वे लड़कियां करीब आ रही हैं, कुछ दोस्त भी बनने को तैयार हैं, तो फिर उनसे वे अपेक्षाएं पालने लगते हैं, जिनका अधूरापन हमें कभी कुंठित और कभी हमलावर बनाता है। दूसरी बात यह कि भारतीय दफ्तरों में यौन हमले बहुत बारीक होते हैं। वे बिल्कुल संकेतों से शुरू होकर आगे बढ़ते हैं। लड़कियां समझते हुए भी ऐसे हमलों को दरकिनार करने को मजबूर होती हैं। लड़कियों को लेकर उनके पीठ पीछे छींटाकशी आम है। यह छींटाकशी उन लड़कियों को ज्यादा झेलनी पड़ती है, जो अपने व्यवहार में कुछ खुली होती हैं। अक्सर इनकी शिकायत आसान नहीं होती। इस MeToo अभियान के विरोध में एक बात और कही जा रही है। बताया जा रहा है कि किस तरह मीडिया में बहुत सारी लड़कियां ऐसी हैं, जो अपनी अयोग्यता के बावजूद बॉस की कृपा से ऊंचे पदों पर पहुंचती रही हैं। कई अनुभव इस सच की तसदीक करते लगते हैं। लेकिन क्या उसी का हिस्सा नहीं है, जिसमें लड़की कभी जबरन और कभी प्रलोभन से उत्पीड़ित की जा रही है...? इस पूरी समस्या को निजी और चारित्रिक समस्या के तौर पर देखेंगे, तो लालन–पालन से लेकर पढ़ाई–लिखाई और बाद में काम–धंधे तक जैसे एक यह ट्रेनिंग चलती रहती है। अक्सर यह संरक्षण भाव चुपचाप मालिकाना हक और अंततः शिकारी बर्ताव में कब बदल जाता है, यह किसी को पता नहीं चलता। ध्यान से देखें और ईमानदारी से मानें, तो पाएंगे कि जिन लोगों पर इस मुहिम के तहत अंगुली उठी है। उनके अलावा हम बहुत सारे लोग कभी न कभी किसी न किसी रूप में घर, दफ्तर, स्कूल–कॉलेज में जाने–अनजाने ऐसा बर्ताव करते रहे हैं, जो लड़कियों को अपने लिए उत्पीड़न जैसा लगे। अपने सार्वजनिक जीवन में अपनी मौजूदगी की तरह–तरह की कीमत चुकाने वाली इन लड़कियों के भीतर कितना दुख जमा है, जो बस एक चोट पर बाहर आने लगा है। जाहिर है, जिन्होंने झेला है, वे अपनी कहानी कह रहे हैं, जिन्होंने ये जुर्म किया है, वे चुप हैं. लेकिन अगर यह मुहिम बहुत सारे लोगों के भीतर एक छिपा हुआ पछतावा भी पैदा करती है, उन्हें अपने–आप से आंख मिलाते हुए शर्मिन्दा होने का एक अवसर देती है, तो यह छोटी बात नहीं है। यह निजी दुश्चरित्रता से ज्यादा एक सामाजिक संकट का मामला है, इसे समझना और इसका सामना करना जरूरी है।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

स्त्रियों की डायबिटीक यौन सम्बन्धी विषमता व उपचार

डायबिटीज की जटिलताओं या विषमताओं के कारण स्त्रियों में यौन उदासीनता (फ्रिजीडिटी) के लक्षण पैदा होने लगते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि स्त्रियों की यौन सम्बन्धी इन समस्याओं के लिए उनके शरीर में पैदा होने वाले हार्मोनल बदलाव, उनकी जननेन्द्रिय में बार–बार के संक्रामक रोग, रक्तवाहिनियों और स्नायु–तंत्रिकाओं के विकार ही मुख्यतः जिम्मेदार रहते हैं।

डायबिटीक स्त्रियों में जननेन्द्रिय संबंधी इन्फैक्शन

डायबिटीक महिलाओं में योनि सम्बन्धी कई प्रकार के संक्रामक रोग प्रायः देखे जाते हैं। मूत्र के अतिरिक्त रक्त ग्लूकोज का स्तर बढ़ने से योनि से स्रावित होने वाले प्राकृतिक स्राव में भी ग्लूकोज की मात्रा बढ़ने लगती है। ऐसा होने पर विभिन्न जीवाणुओं, विषाणुओं, फफूंद और प्रोटोजोआ आदि को तेजी से फैलने का अवसर मिलता है, इससे बार–बार योनि संक्रमण का खतरा बना रहता है।

डायबिटीक स्त्रियों की योनि संक्रमण के लक्षण

डायबिटीक स्त्रियों के योनि मार्ग का कैन्डिडा एल्बिकेन्स फफूंद का संक्रमण सबसे अधिक आम समस्या है, कुछ स्त्रियों में तो डायबिटीज है या नहीं इसकी जानकारी ही कैंडिडा संक्रमण के बार–बार होने वाले हमले की जाँच के दौरान ही पता चलती है, क्योंकि इस संक्रमण में शंका होने पर मूत्र और रक्त दोनों की जाँच कराई जाती है।

इस संक्रमण (फफूंद संक्रमण) में स्त्रियों की योनि में हमेशा एक पीलापन लिए बदबूदार स्राव रिसता रहता है। इससे उनकी योनि में तेज खुजली के साथ जलन भी होती है। कई बार फफूंद से उत्पन्न यह स्राव सफेद पपड़ी के रूप में योनि के अन्दर, वृहद भगोष्ठ तक फैल जाता है और आस–पास एक परत सी

बना लेता है, जिसके कारण स्त्रियों की योनि सदैव सूखी रहती है जिस कारण के दौरान भी असुविधा रहती है। कैन्डिडा एल्बिकेन्स फफूंद का संक्रमण योनि के अतिरिक्त शिश्न (पुरुष), मुँह, त्वचा और नाखूनों में भी देखा जाता है, इस संक्रमण रोग को ''कैन्डिडियासिस'' कहा जाता है।

स्वस्थ अवस्था में एक व्यक्ति के रक्त सीरम में बीटा–ग्लोबिन नामक एक ''एण्टी केन्डिडल फैक्टर'' पाया जाता है, यह फैक्टर फफूंद को विकसित होने से रोकता है परन्तु ज्यादा ग्लूकोज बढ़ने की स्थिति में कैंडिडासिस के दौरान बीटा ग्लोबिन नामक यह एण्टी कैन्डिडल फैक्टर बहुत कम मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए फफूंद को विकसित होने में मदद मिलती है।

कैन्डिडा संक्रमित स्त्री के साथ यौन संबंध बनाने पर पुरुष भी इस संक्रमण से ग्रस्त हो सकते हैं, यद्यपि पुरुषों में इसके लक्षण कम ही प्रकट होते हैं लेकिन फिर भी एहतियात के लिए कण्डोम का प्रयोग जरूर करें और स्त्री का पूरा इलाज करवाएँ।

स्त्रियों में अन्य जीवाणुओं और विषाणुओं के संक्रमण से भी श्वेतप्रदर यानि ल्यूकोरिया की शिकायत हो सकती है। इनसे भी योनि में तीव्र खुजली के साथ दुर्गन्धयुक्त सफेद–पीला स्राव रिसता रहता है व योनि गीली रहती है, जिससे महिला बेचैनी व असुविधा महसूस करती है।

कैन्डिडा इन्फैक्शन के उपचार

कैन्डिडा फफूंदी का उपचार रक्तग्लूकोज पर प्रभावित नियंत्रण के अतिरिक्त स्थानीय रूप से फफूंदीनाशक क्रीम या पेसरी तथा माइकोस्टेरिन, निस्टेरिन, एम्फोर्टरासिन–बी लोशन, मिकानेजॉल, क्लीटीमेजॉल जैसी दवाओं का पूरा कोर्स करने पर संभव है। लेकिन डायबिटीक पेशेन्ट को यह संक्रमण भोजन में लापरवाही, सफाई की लापरवाही आदि कारणों से बार–बार ग्रस्त कर सकता है। अतः डॉक्टर से बराबर परामर्शनुसार दवाओं का कोर्स कम्प्लीटली करें।

कई बार डायबिटीक लेडी पेशेन्ट को मूत्रमार्ग व छिद्र में भी जीवाणु संक्रमण हो जाता है जिसका उपचार न करवाने से यह गुर्दों तक पहुँच जाता है अतः इसके निदान हेतु मूत्र के वेग को न रोकें। मूत्र त्याग के बाद पानी से वॉश करें, डॉक्टर द्वारा दी गई एण्टीबायोटिक दवा का कोर्स कम्प्लीटली सेवन करें, पानी खूब पीएँ।

वेजाइना या शिश्न (पुरुष) में खुजली का उपचार

❖ पानी ज्यादा से ज्यादा पीएँ, सुबह के समय नींबू पानी जरूर लें बिना चीनी व नमक के।

❖ नीम, त्रिफला के पानी (काढ़े) से अपने प्राइवेट पार्ट को रोजाना ३–४ बार साफ करें। जननेन्द्रिय के अन्दर निम्बटैल लगाएँ इसके अतिरिक्त भुनी फिटकरी के आधे चम्मच चूर्ण को एक या डेढ़ लीटर पानी में मिलाकर योनि व शिशन की सफाई करें।

❖ इन रोगियों की सफाई के उपचार के साथ विशेष चन्द्रप्रभावटी की २–२ गोली, मंजिष्टादि घनवटी की २–२ गोली दिन में तीन बार पानी से लेनी चाहिए।

इन दवाओं के प्रयोग से संक्रमण में जल्द ही लाभ मिलता है।

नींबू एक गुण अनेक

इसमें विटामिन 'सी' अधिक मात्रा में होता है, अतः यह स्कर्वी रोग में बहुत उपयोगी है।

❖ मसूढ़ों से खून निकलने पर नींबू का रस उंगली के सिरे पर लेकर दाँतों व मसूढ़ों पर मलने से खून निकलना बंद हो जाता है।

❖ यदि किसी कारण ज्यादा खा लिया हो तो चिंता की कोई बात नहीं है, तुरन्त एक गिलास ठंडे पानी में नींबू निचोड़कर पी लें। बदहजमी दूर हो जायेगी।

❖ प्रतिदिन एक गिलास ठंडे पानी में नींबू रस पीने से कब्ज की शिकायत दूर होगी। साथ ही जिनको हाई ब्लड प्रेशर रहता है, सामान्य रहेगा और हाँ, मोटापे से दूर रहेंगे और दिन भर स्फूर्ति भी बनी रहेगी।

❖ नींबू स्वास्थ्य का ही नहीं, सौंदर्य का भी साथी है। एक बाल्टी गुनगुने अथवा ठंडे पानी में नींबू निचोड़कर उससे स्नान करने से त्वचा मुलायम और चमकदार बनी रहती है और पूरे शरीर में एक खुशबू सी रहती है।

❖ दो चम्मच बेसन, एक चम्मच मलाई, आधा चम्मच नींबू रस और चुटकी भर हल्दी मिलाकर लगाएँ और रगड़कर छुड़ा दें। इससे त्वचा का रंग निखरता है।

अजवायन

आर्युवेदिक मत : अजवायन पाचन के विकारों दिली दुर्बलता, कास–श्वांस कृति रोग और मुत्राघात में लाभ देती है। कटु तिक्तरस, लघुरुक्ष, तीक्षण गुण उष्ण वीर्य कटु विपाक है। यह कफ वात शामक, रोचक, दीपक, पाचक, अनुलोमक, शूलनाशक एंव कृमि नाशक है। यह ह्रदयोत्तेजक एवम श्वांस हर है। मूत्र जनन शुक्र नाशक है गर्भाश्योत्तेजक है। त्वग्र रोग नाशक स्वेदजनन ज्वर नाशक और विष नाशक है। अजवायन का लेप या इसके तेल की मालिश करने से दर्द और सूजन दूर होती है। अफरा गुल्म तिल्ली और कृति को मिटाने वाली उपरान्त वात नाशक तनावहर शूल हर कफ्ज ज्वराध व्रणारोपरण का एवं दुर्गन्ध हर है।

चरक : अजवायन को शूल प्रशमन और दीप नीम शूल मिटाने वाली तथा भूख लगाने वाली मानते हैं।

सुश्रव : अजवायन को वात कफ नाशक अरूचि नाशक गुलम शूलहर, दीपन और आम पाचक मानते हैं।

अजवायन सड़ने को रोकने वाली सभी औषधियों में श्रेष्ठ है–

यूनानी मत : बीजों में एक खुशबूदार तेल होता है जो ठंडक से जम जाता है उसे सत अजवायन कहते हैं। फेफड़े की गले की निकटवर्ती नली पर सूजन आने और कफ अधिक मात्रा में निकलने पर कफ को बन्द करने के लिए अजवायन देने तथा अजवायन पीस कर उसकी पुलटिस बनाकर बांधने की सलाह देते हैं। उपरान्त नेत्राजन को जन्तु नाशक बनाने के लिए अजवायन के अर्क की भावना भी देते हैं।

वैज्ञानिक मत : अजवायन का प्रमुख गुण तो उसके तेल में ही रहता है। अजवायन गर्भ, पेट के दर्द को नष्ट करने वाला और शूल को मिटाने वाला है पेट का गुल्म अजीर्शा पेचिश, दस्ते वगैरा में यह उपयोगी है।

डा० बुड के मतानुसार : अजवायन में काली मिर्च और राई की उष्णता, चिरायतें की कड़वाहट और हींग की तनाव हिचकी, नाशकता यह तीनों गुण विद्यमान हैं। अजवायन के बीज में ५ प्रतिशत तेल होता है बीजों में एक सुगन्धित तेल होता है जो ठंड से जम जाता है उसे सत अजवायन कहते हैं।

हरिश्चन्द्र आर्य

महाभारत काल के बाद महर्षि दयानन्द सरस्ववती जी ने ही सत्य ईश्वर की अनुभूति करायी

पं० उम्मेद सिंह विशारद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम व सप्तम सम्मुलास में ईश्वर की अनुभूति करायी व अन्य सम्मुलास में संकेत दिया कि महाभारत काल से एक हजार वर्ष पूर्व तक समाज में वेदों का पठन–पाठन था, तथा वेदानुसार संस्कार होते थे, और वैदिक संस्कृति व सभ्यता का ही चलन था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सम्मुलास के प्रारम्भ में ओउम् यह औंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और मृ तीन अक्षर मिलकर एक (ओउम) समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे–अकार से विराट अग्नि और विश्वादि। उंकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं। "ओउम्" यह तो केवल परमात्मा ही का नाम है।

ततो विराडजायत विराजो
ओधपुरुषः।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च
मुखादग्निरजायत।। यजुःअ०३

वेदों के व तैत्तिरीयोपनिषद के प्रमाणों में विराट, पुरुष, देव, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि आदि नाम लौकिक पदार्थों के होते हैं, क्योंकि जहाँ–जहाँ उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जडः छश्य आदि विशेषण भी लिखे हों वहाँ–वहाँ परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता। वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक है, और उपरोक्त मन्त्रों में उत्पत्ति आदि व्यवहार है, इसी से यहाँ विराट आदि नामों से परमात्मा का ग्रहण न हो के संसारी पदार्थों का ग्रहण होता है। किन्तु जहाँ–जहाँ सर्वज्ञादि विशेषण हों वहीं–वहीं परमात्मा और जहाँ–जहाँ इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख–दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हों वहाँ–वहाँ जीव का ग्रहण होता है ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए।

क्योंकि परमेश्वर का जनम–मरण कभी नहीं होता, इससे विराट आदि नाम और जन्मादि विशेषणों से जगत के जड़ और जीवादि पदार्थों का ग्रहण करना उचित है, परमेश्वर का नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश प्रथम सम्मुलास)

ऋचो अक्षरे परमे
व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे
निषेदुः।
यसतन्न वेद किमृचा करिष्यति
य इत्तद्विदुस्त इमे
समसस्ते।।(ऋ०)

अर्थातः– (प्रश्न) वेदों में अनेक देवता लिखे हैं उसका क्या अभिप्राय है?

(उत्तर) देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं जैसी कि पृथ्वी परन्तु इसको कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। देखो इस मंत्र में कि जिसमें सब देवता स्थित है, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है। यह उनकी भूल है जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं। परमेश्वर देवों का देव होने से महादेव इसलिये कहता है कि वही सब जगत की उत्पत्ति स्थिति, प्रलयकर्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है। (ऋचो अक्षरे) अर्थात् जो सब दिव्य गुण, कर्म स्वभाव विद्यायुक्त और जिसमें पृथ्वी, सूयर्यादि लोक स्थित है, और जो आकाश के समान व्यापक सब देवों का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर में डूबे ही रहते हैं। सर्वदा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं।

ईशा वास्यमिंद सर्व यत्किन्य
जगत्यान्जगत।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मागृधः
कस्य स्विद्धनम।। (यजुर्वेद)

अर्थात्–हे मनुष्य! जो इस संसार में जगत है, उस सब में व्याप्त होकर जो नियन्ता है वह ईश्वर कहाता है। उससे डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायचरणरूप धर्म से अपने आत्मा से धर्म को भोग।

अहनिन्द्रो न परा जिग्य इध्दंन
न मृत्यंद २ वतस्थे कदाचन।
सोममिन्सा सुन्वन्तो याचता
वसु न मे पूखः सख्ये
रिषाधन।। (ऋ०वे०)

अर्थात– मैं परमैश्वर्यवान सूर्य के सदृश सब जगत का प्रकाशक हूँ। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूँ। मैं ही जगत रूप धन का निर्माता हूँ। सब जगत की उत्पत्ति करने वाले मुझी को ही जानो। हे जीवो ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानदि धन को मुझ से माँगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य
जातः पतिरेक आसीत।
स दाधार पृथिवी द्यामु तेमा
कस्मैं देवाय हविषा विधेम।।
(यजुर्वेद)

अर्थात– हे मनुष्यो! जो सृष्टि से पूर्ण सुर्यादि तेज वाले लोकों का उत्पत्ति स्थान आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ था और होगा उसका स्वामी था, है और होगा। वह पृथ्वी से लेके सूर्यलोक पर्यन्त सृष्टि को बना के धारण कर रहा है उस स्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो। (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम स.)

स पर्यगाच्छुक्रमकाय
मव्रणमस्नाविर शुद्धमपाप
विद्धम। (यजुर्वेद)

ईश्वर की स्तुति–वह परमात्मा सब में व्यापक शीघ्रकारी और अनन्त बलवान जो शुद्ध सर्वज्ञ, सबका शेष पृष्ठ 11 पर

अटल पर थी गांधी व नेहरू के विचारों की छाप

भाजपा नेता अटल बिहारी बाजपेयी का ६३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे ३ बार १३ दिनों के लिए–१३ माह के लिए और ४ सही १/२ वर्षों तक प्रधानमंत्री रहे। इससे पहले २ सही १/२ वर्षों तक विदेश मंत्री भी रहे। उनसे हुई गलतियाँ इस प्रकार हैं– (निधन १६–८–२०१८)

१. आपने १६७८ में अल्पसंख्यक कमिश्नर का पद समाप्त करके, अल्पसंख्यक आयोग बनवा दिया ताकि मुस्लिम खुश हो जाएं जबकि आपको मानवाधिकार आयोग बनवाना चाहिए था।

२. आपने विदेश मंत्री रहते हुए कहा था कि उन्हें मंत्री बनने पर लग रहा है कि धारा ३७० नहीं हट सकती है जबकि उन्हें कहना चाहिए था कि वे अस्थायी धारा ३७० को हटाने के लिए हर स्तर पर प्रयास और कार्य करेंगे।

३. आपने उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों का अलग राज्य बनवा दिया। आन्दोलन कारी नए राज्य का नाम उत्तराखंड चाहते थे लेकिन आपने नाम उत्तरांचल रखवा दिया। *अधिकांश लोगों को उत्तरांचल नाम पसन्द नहीं आया।* राज्य में कांग्रेस की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने उत्तरांचल नाम समाप्त करके नया नाम उत्तराखंड रखवा दिया। नाम बदलने की कार्रवाई में राज्य सरकार के ५०० करोड़ रुपए व्यय हुए। इसके दोषी अटल बिहारी बाजपेयी ही रहे।

४. मतभेदों के कारण जनता पार्टी टूटी तब आपने ६–४–१६८० को स्वयं सेवकों के लिए भारतीय जनता पार्टी बनाई जो कांग्रेस की कार्बन कापी की तरह है। ध्वज में भगबा रंग २/३ करके हरा रंग १/३ रखा गया। अल्पसंख्यक मोर्चा बना दिया और गांधी को महान मानना शुरू कर दिया।

५. पूर्वोत्तर के दौरे पर आपने वक्तव्य दिया कि गोवध बन्दी कानून बना तो उससे तीनों ईसाई राज्यों को मुक्त रखा जाएगा।

६. आपने दो बार गोभक्षक ईसाई नेताओं को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया किन्तु दोनों हार गए। यदि कोई जीत जाता तो राष्ट्रपति भवन में गोमांस खाया जाता।

७. आपने मुस्लिम प्रेमी दिखाने के लिए वैज्ञानिक ड़ा० कलाम को राष्ट्रपति बनाया जो ५ वर्ष तक पद पर रहे। पद सम्भालते ही उन्होंने हिन्दू को हटाकर मुस्लिम को सचिव बना दिया।

८. कांग्रेस ने ३ राज्यपाल बनाए थे। आपने शासन सम्भालते ही दोनों हिन्दू राज्यपालों को तो हटा दिया किन्तु तीसरे को नहीं हटाया क्योंकि वे मुस्लिम थे। (नाम–सिकन्दर बख्त)

६. आपने कानपुर में उर्दू में प्रचार पत्रक छपवाए जिसमें हस्ताक्षर उर्दू में किए जबकि आपको उर्दू नहीं आती है।

१०. अपने पक्ष में लहर का अनुमान लगाकर आपने २००४ में लोकसभा चुनाव छह महीने पहले करा लिए। जब चुनाव परिणाम घोषित किए गए तब आपको इस्तीफा देना पड़ा क्योंकि सोनिया गांधी की कांग्रेस ने बाजपेयी की भाजपा को हरा दिया। मृत प्रायः हिन्दू अब भाजपा से आशा रखता है जबकि बाद में उसे निराश ही होना पड़ेगा। हिन्दू के दिन खराब चल रहे हैं।

आई०डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

भारत का स्वर्णिम अतीत

साभार शिशु मंदिर संदेश

भारत के इतिहास/अतीत पर दुनियाँ भर के २०० से अधिक विद्वानों/इतिहास विशेषज्ञों ने बहुत शोध कियां है। इनमें से कुछ विद्वानों/इतिहास विशेषज्ञों ने बहुत शोध किया है। इनमें से कुछ विद्वानों/इतिहास विशेषज्ञों की बात आपके सामने प्रस्तुत है। ये सारे विद्वान/इतिहास विशेषज्ञों की बात आपके सामने प्रस्तुत है। ये सारे विद्वान/इतिहास विशेषज्ञ भारत से बाहर के हैं, कुछ अंग्रेज हैं, कुछ स्कॉटिश हैं, कुछ अमेरिकन हैं, कुछ फ्रेंच हैं, कुछ जर्मन हैं। ऐसे दुनियाँ के अलग अलग देशों के विद्वानों/इतिहास विशेषज्ञों ने भारत के बारे में जो कुछ कहा और लिखा है उसकी जानकारी दी जा रही है। आज आप भारत के विषय में कुछ ऐसी जानकारी पढ़ेंगे जो न तो पहले आपने पढ़ी होगी और न ही सुनी होगी। ये बहुत ही आश्चर्य और दुःख की बात यह है कि हमारी सरकार इस प्रकार की जानकारी को छुपाती है, इसको आज की शिक्षा–प्रणाली में शामिल नहीं करती। आखिर क्यों नहीं बताया जाता है हमको हमारे भारत के विषय में !! क्यों स्कूल की किताबों में बस वही सब मिलता है जिससे हम अपने अतीत पर गर्व नहीं, शर्म कर सकें!! और दुःख इस बात का भी है कि आधुनिक सरकारी–शिक्षा ने हमें ऐसा बना दिया है कि हमारे लिए भारत के वास्तविक अतीत पर विश्वास करना सहज नहीं है, लेकिन स्कूल में पढ़े आधे–अधूरे सत्य पर हमें विश्वास हो जाता है। चलिए आज आपका परिचय कराते हैं... भारत *के स्वर्णिम अतीत से !!!*

सबसे पहले एक अंग्रेज जिसका नाम है 'थॉमस बैबिंगटन मैकाले', ये भारत में आया और करीब १७ साल रहा। इन १७ वर्षों में उसने भारत का काफी प्रवास किया, पूर्व भारत, पश्चिम भारत, उत्तर भारत, दक्षिण भारत में गया। अपने १७ साल के प्रवास के बाद वो इंग्लैंड गया और इंग्लैंड की पार्लियामेंट 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में उसने २ फरवरी १८३५ को ब्रिटिश संसद में एक लम्बा भाषण दिया। उसका अंश इस प्रकार है:– **I have traveled across the length and breadth of India and have not seen one person who is a beggar, who is a thief, such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage, and, therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self esteem, their native culture and they will become what we want them, A truly dominated nation."** इसी भाषण के अन्त में वो एक वाक्य और कहता है: वो कहता है "भारत में जिस व्यक्ति के घर में भी मैं कभी गया, ता मैंने देखा कि वहाँ सोने के सिक्कों का ढेर ऐसे लगा रहता हैं, जैसे कि चने का या गेहूं का ढेर किसानों के घरों में रखा जाता है, भारतवासी इन सिक्कों को कभी गिन नहीं पाते, क्योंकि गिनने की फुर्सत नहीं होती है इसलिए वे तराजू में तौलकर रखते हैं। किसी के घर में १०० किलो, किसी के यहाँ २०० किलो और किसी के यहाँ ५०० किलो सोना है, इस तरह भारत के घरों में सोने का भंडार भरा हुआ है।"

इससे भी बड़ा एक दूसरा प्रमाण मैं आपको देता हूँ। एक अंग्रेज इतिहासकार हुआ उसका नाम है विलियम डिगबी। "विलियम डिगबी कहता है कि अंग्रेजों के पहले का भारत की भूमि इतनी उपजाऊ है जितनी दुनियाँ के किसी देश में नहीं। भारत के व्यापारी इतने होशियार हैं जो दुनियाँ के किसी देश में नहीं। भारत के कारीगर जो हाथ से कपड़ा बनाते हैं उनका बनाया हुआ कपड़ा रेशम का तथा अन्य कई वस्तुएँ पूरे विश्व के बाजार में बिक रही हैं। भारत में सोना और चाँदी ऐसे प्रवाहित होता है जैसे नदियों में पानी प्रवाहित होता है और भारत की नदियों में पानी प्रवाहित होकर जैसे महासागर में गिर जाता है वैसे ही दुनियाँ की तमाम नदियों का सोना चाँदी भारत में प्रवाहित होकर भारत रूपी महासागर में आकर गिर जाता है। अपनी पुस्तक में वो लिखता है कि दुनियाँ के देशों का सोना चाँदी भारत में आता तो है लेकिन भारत के बाहर १ ग्राम सोना और चाँदी कभी जाता नहीं है। इसका कारण वो बताता है कि भारतवासी दुनियाँ की सारी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं लेकिन वो कभी किसी से खरीदते नहीं हैं।" इसका मतलब हुआ कि आज से ३०० साल पहले का भारत निर्यात प्रधान देश था। एक भी वस्तु हम विदेशों से नहीं खरीदते थे।

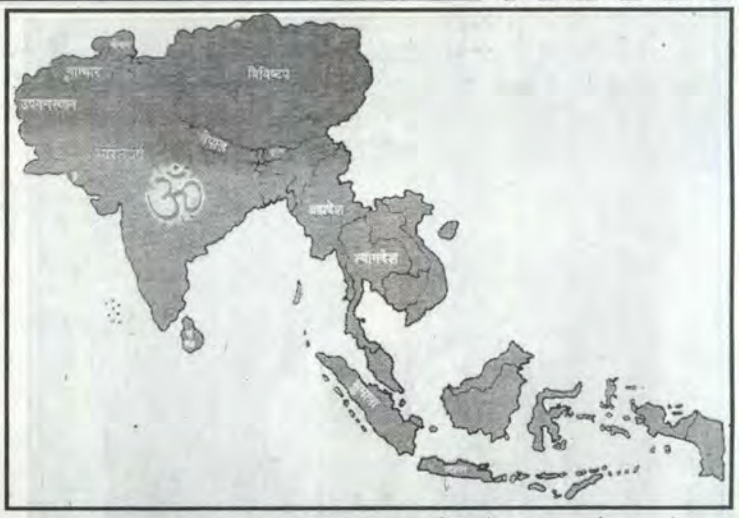

एक और बड़ा इतिहासकार हुआ वा फ्रांस का था, उसका नाम है "फ्रांसवा पिराड"। वो अपनी पुस्तक में लिखता है कि "भारत देश में मेरी जानकारी में ३६ तरह के ऐसे उद्योग चलते हैं जिनमें उत्पादित होने वाली हर वस्तु विदेशों में निर्यात होती है। भारत के सभी शिल्प और उद्योग उत्पादन में सबसे उत्कृष्ट, कला पूर्ण और कीमत में सबसे सस्ते हैं। सोना, चाँदी, लोहा, इस्पात, तांबा, अन्य धातुएँ, जवाहरात, लकड़ी के सामान, मूल्यवान दुर्लभ पदार्थ इतनी ज्यादा विविधता के साथ भारत में बनती हैं जिनके वर्णन का कोई अंत नहीं हो सकता।"

एक स्कॉटिश है जिसका नाम है 'मार्टिन' वो इतिहास की पुस्तक में भारत के बारे में कहता है: "ब्रिटेन के निवासी जब बर्बर और जंगली जानवरों की तरह से जीवन बिताते रहे तब भारत में दुनियाँ का सबसे बेहतरीन कपड़ा बनता था और सारी दुनियाँ के देशों में बिकता था। भारतवासियों ने सारी दुनियाँ को कपड़ा बनाना और कपड़ा पहनना सिखाया है" हम अंग्रेजों ने और अंग्रेजों की सहयोगी जातियों के लोगों ने भारत से ही कपड़ा बनाना सीखा है और पहनना भी सीखा है। रोमन साम्राज्य में जितने भी राजा और रानी हुए हैं वो सभी भारत से कपड़े मंगाते रहे हैं, पहनते रहे हैं।

एक 'जेम्स फ्रैंकलिन' नाम का अंग्रेज जो धातुकर्मी विशेषज्ञ था वो कहता है कि: "भारत का स्टील दुनियाँ में सर्वश्रेष्ठ है। भारत के कारीगर स्टील को बनाने के लिए जो भट्टियाँ तैयार करते हैं वो दुनियाँ में कोई नहीं बना पाता। इंग्लैंड में लोहा बनाना तो हमने १८२५ के बाद शुरू किया। भारत में तो लोहा १०वीं शताब्दी से ही हजारों–हजारों टन में बनता रहा है और दुनियाँ के देशों में बिकता रहा है। डॉ स्कॉट ने उस स्टील की जांच कराने के बाद कहा कि ये भारत का स्टील इतना अच्छा है कि सर्जरी के लिए बनाए जाने वाले सारे उपकरण इससे बनाए जा सकते हैं. जो दुनियाँ में किसी देश के पास उपलब्ध नहीं हैं। मुझे ऐसा लगता है कि भारत का ये स्टील हम पानी में भी डालकर रखें तो इसमें कभी जंग नहीं लगेगा क्योंकि इसकी क्वालिटी इतनी अच्छी है।"

एक अंग्रेज है लेफ्टिनेंट कर्नल ए. वॉकर उसने भारत की शिपिंग इंडस्ट्री पर सबसे ज्यादा शोध किया है। वो कहता है कि "भारत का जो अद्भुत लोहा/स्टील है वो जहाज बनाने के काम में सबसे ज्यादा आता है। दुनियाँ में जहाज बनाने की सबसे पहली कला और तकनीकी भारत में ही विकसित हुई और दुनियाँ के देशों ने पानी के जहाज बनाना भारत से सीखा है। फिर वो कहता है कि भारत इतना विशाल देश है जहाँ दो लाख गाँव हैं इनमें से अनेक गाँवों में जहाज बनाने का काम पिछले हजारों वर्षों से चलता है। वो कहता है कि हम अंग्रेजों को अगर जहाज खरीदना हो तो हम भारत में जाते हैं और जहाज खरीद कर लाते हैं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के जितने भी पानी के जहाज दुनियाँ में चल रहे हैं ये सारे के सारे जहाज भारत की स्टील से बने हुए हैं। ये बात मुझे कहते हुए शर्म आती है कि हम अंग्रेज अभी तक इतनी अच्छी क्वालिटी का स्टील बनाना नहीं शुरू कर पाये हैं। वो कहता है भारत का कोई पानी का जहाज जो ५० साल चल चुका है उसको हम खरीद कर ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में लगाएँ तो ५० साल भारत में चलने के बाद भी वो हमारे यहाँ २०–५० साल और चल जाता है। इतनी मजबूत पानी के जहाज बनाने की कला और टेक्नालॉजी भारत के कारीगरों के हाथ में है। आगे वो कहता है हम जितने धन में १ नया पानी का जहाज बनाते हैं उतने की धन मं भारतवासी ४ नए जहाज पानी के बना लेते हैं। फिर वो अंत में कहता है कि हम भारत में पुराने पानी के जहाज खरीदें और उसको ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में लगाएँ यही हमारे लिए अच्छा है। इसी तरह से वो कहता है भारत में तकनीक के द्वारा ईंट बनती है, ईंट से ईंट को जोड़ने का चूना बनता है उसके अलावा ३६ तरह के दूसरे इंडस्ट्री हैं। इन सभी उद्योगों में भारत दुनियाँ में सबसे आगे है, इसलिए हमें भारत से व्यापार करके ये सब तकनीकी लेनी है और इन सबको इंग्लैंड में लाकर फिर से पुनः उत्पादित करना है।"

भारत के विज्ञान के बारे में बीसियों अंग्रेजों ने शोध किया है और वो ये कहते हैं कि भारत में विज्ञान की २८० से ज्यादा शाखाएं हैं, जो बहुत ज्यादा पुष्पित और पल्लवित हुई हैं। उनमें से सबसे बड़ी शाखा है खगोल विज्ञान, दूसरी नक्षत्र विज्ञान, तीसरी बर्फ बनाने का विज्ञान, चौथी धातु विज्ञान, भवन निर्माण का विज्ञान, ऐसी २० तरह की वैज्ञानिक शाखाएँ पूरे भारत में हैं। वॉकर लिख रहा है कि "भारत में ये जो विज्ञान की

शेष पृष्ठ 10 पर

बाहें पसारता हिन्दू समाज

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

राष्ट्र के प्रति सर्वाधिक प्रतिबद्ध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत जी ने पिछले दिनों एक तीन दिवसीय कार्यक्रम में अनेक बिंदुओं पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करके सम्पूर्ण भारतीय समाज को अपने मानवतावादी विचारों से अवगत करवाया। मुख्यतः उनका लक्ष्य अनेक सम्प्रदायों में विखरे हुए समाज को संगठित करके देश के सशक्त निर्माण में उनकी भागेदारी सुनिश्चित करने का सकारात्मक प्रयास है? लेकिन उनके वक्तव्य के कुछ मुख्य बिंदू अवश्य विचारणीय है, जैसे...जिस दिन हम कहेंगे कि मुसलमान नही चाहिये... उस दिन हिंदुत्व भी नही रहेगा, जिस दिन कहेंगे कि यहां केवल वेद चलेंगे, दूसरे ग्रंथ नही चलेंगे...उसी दिन हिंदुत्व का भाव नष्ट हो जायेगा, क्योंकि हिंदुत्व में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना समाहित है ... जितने भी सम्प्रदाय जन्में है सबकी मान्यतायें है, हिंदुत्व के दर्शन में किसी भी सम्प्रदाय से अलगाव नही है।

इतिहास में भी प्रायः मुसलमानों का गुणगान करते हुए यह पढ़ाया जाता है कि वे बाहर से आये और हमारे ऊपर ६००–७०० वर्षो तक राज किया और उनमें से एक अकबर को महान बना दिया गया। लेकिन उन्होंने हमारे मठ–मंदिरों का विंध्वस किया, हमारे लाखों, करोड़ों पूर्वजों का बलात धर्मातरण व भयानक नरसंहार करने के अतिरिक्त हमारी बहन–बेटियों पर अमानवीय अत्याचार किये आदि के इतिहास को साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के लिये हमारे नीतिनियन्ताओं ने अधिक महत्व नही दिया।

यहां एक अत्यंत कष्टकारी बिंदु सोचने को विवश करता है कि जब अन्य सम्प्रदाय हिंदुत्व के प्रति सौहार्द के स्थान पर वैमनस्यपूर्ण व्यवहार करते आ रहे थे, है और भविष्य में भी उसमें कोई परिवर्तन होने की संभावना शिथिल हो तो ऐसे में क्या किया जाय? क्या उन सम्प्रदायों की भारत के मूल निवासियों के बलात धर्मातरण की अनाधिकार चेष्टा उचित है? क्या उनको अपने–अपने सम्प्रदाय को श्रेष्ठ स्थापित करने की दूषित महत्वाकांक्षा के वशीभूत हिंदुत्व पर अत्याचार करते रहने का मौलिक अधिकार मिला हुआ है? जबकि हमारा इतिहास साक्षी है कि आक्रांताओं और धर्मांधों की हमारी संस्कृति और धर्म को नष्ट करने के लिये किये गये अत्याचारों की कोई सीमा नही थी। वर्तमान में भी ऐसे कट्टरपंथी साम्प्रदायिकता को भड़का कर हिन्दू समाज को शांतिपूर्वक जीवन निर्वाह करते रहने में बाधक बनें हुए है। विभिन्न गावों व नगरों में प्रायः होने वाले साम्प्रदायिक दंगे व आतंकवादियों

के द्वारा निर्दोष और मासूमों को बम विस्फोटो से उड़ाना आदि कट्टरपंथियों के घिनौने प्रदर्शन अभी भी अनियंत्रित है। ऐसे में हम सबकी मान्यताओं का सम्मान करते हुए एक तरफा सहिष्णु बनकर कब तक अपने आप को आहत होते देखते रहें? अपने अस्तित्व की रक्षार्थ कर्तव्यविमुख होकर केवल उदारता व अहिंसा के गुणगान करने से क्या हम आत्महत्या के पाप का भागी नही बन जाएंगे? हम कब तक बाहें पसारें सभी को गले लगाने को आतुर होते रहेंगे?

जब ६० वर्षो से हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है की प्रेरणा से करोड़ों देशभक्तों का निर्माण करने वाला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने ही सिद्धान्तों और आदर्शो पर प्रश्नचिन्ह लगायेगा तो १३०० वर्षो से चल रहे जिहादियों के अत्याचारों पर अंकुश लगा कर मानवता की रक्षार्थ कौन सतर्क होगा? क्या अपने को समयानुसार परिवर्तनशील ,उदारवादी व सामाजिक समरसता में ढलने का ज्ञान बाटनें वाला हिन्दू समाज जिहादी दर्शन में भी परिवर्तन करवाने का प्रयास करेगा? हिंदुओं से ही सदैव यह आशा क्यों की जाती है कि वे ही अपने आप को इस्लाम व ईसाईयत के अनुरूप ढाल लें और एक तरफा उदार व सहिष्णु बनें रहें...क्या यह दृष्टिकोण हिंदुओं की सनातन आस्थाओं और श्रद्धाओं को आहत नही करेगा? हमारी व हमारे नेताओं की भावनावश हिन्दू–मुस्लिम सांझी परंपराओं व सांझे पूर्वजों का गुणगान करने से भी मुसलमानों की जिहादी मनोवृत्ति को प्रभावित नही किया जा सकता। लेकिन ऐसे सद्भावनापूर्ण प्रयासो से हिन्दू अवश्य भ्रमित होता आ रहा है। इसलिये आज भी हमारे अनेक महापुरुषों का विचार कि सहनशील व सहिष्णु होना अच्छा गुण है, परन्तु अन्याय का विरोध उससे कई गुणा उत्तम है प्रसांगिक है। धर्मानुसार न्याय के साथ सहिष्णुता का व्यवहार व अन्याय के साथ असहिष्णुता का मार्ग ही स्वधर्म रक्षार्थ आवश्यक होता है। सामान्यतः विश्वबंधुत्व की भावना के कारण ही हम हिन्दू मित्र व शत्रु में भेद नही कर पाते जिससे वर्तमान व भविष्य के संकटो से अनभिज्ञ रहते है। परिणाम स्वरूप धर्म व देश की रक्षार्थ उदासीन हो जाते है। स्वातंर्त्यवीर सावरकर जी का दूरदर्शी संदेश आज भी प्रसांगिक है, उन्होंने कहा था कि जिस राष्ट्र की जनता शत्रु और मित्र को पहचानने में भूल करती है, उस राष्ट्र को उस भूल का भयंकर परिणाम भुगतना पड़ता है। हमारे ग्रंथों में भी यह स्पष्ट आदेश है कि मित्र के साथ मित्रवत व शत्रु के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार ही उचित रहता है। धर्माधारित देश के विभाजन के उपरांत भी पाकिस्तान, बांग्लादेश व कश्मीर आदि मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में ही अब तक लगभग एक करोड़ से ऊपर हिंदुओं का धर्म के नाम पर बलिदान हुआ हो तो कोई आश्चर्य नही होगा। परंतु जब हमारे धर्माचार्यो व नेताओं को सर्वधर्म समभाव, सहिष्णुता, उदारता व अहिंसा के उपदेश देने में ही परम आनन्द आता हो तो धर्मांधों व जिहादियों का दुःसाहस बढ़ना स्वाभाविक ही है। हिंदुओं में तेजस्विता का अभाव और उनकी समझौतावादी मनोवृत्ति ने भी हिन्दू विरोधी षडयंत्रकारियों को उत्साहित किया है। बाहें पसारता हिन्दू समाज कब तक सैकड़ों वर्षो से आत्मसमर्पण की पराजित भावनाओं से घिरा रहेगा? हम कब तक यह सोचने को विवश होते रहेंगे कि भारत में राष्ट्रभक्ति रहित राजनीति के वर्चस्व से कब छुटकारा मिलेगा? विशेषतौर पर आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जब मुख्य रूप से धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार की प्रमुखता से धर्मनिरपेक्षता जर्जर हो रही हो और सुरक्षित, सु.ढ़ व गौरवशाली भारत के निर्माण की योजनाओं की प्राथमिकता का अभाव हो रहा हो।

ध्यान रहें वसुधैव कुटुम्बकम के मंत्र से संस्कारित हिंदुत्व अपने शास्त्रों के ज्ञान के आधार पर मानवता की रक्षा करके उसको ऊर्जावान व प्रकाशवान करना चाहता है। ऐसे में जो दर्शन मानव समाज को विभक्त करते हो तो उसमें संशोधन करवाने का (सम्पूर्ण समाज को अपना परिवार मानने वाली) भारतीय संस्कृति भी दायित्व निभाये तो अनुचित नहीं होगा।वैसे भी हिंदुत्व में अलगाववाद का कोई स्थान नही तो उसे अलगाववादी दर्शन का विरोध तो करना ही चाहिये। आज जब संघ के द्वितीय प्रमुख गुरु गोलवरकर जी की पुस्तक **द बंच ऑफ थोंट्स** की समीक्षा करके हिन्दू समाज बाहें पसारने को आतुर है, तो अन्य सम्प्रदायों को भी अपन अपने रूढ़िवादी ग्रंथो की समीक्षा करनी चाहिये। अतः सभी सम्प्रदायों के धार्मिक विद्वानों का भी यह दयित्व है कि वे अपने धर्म ग्रंथों और विद्याओं में आवश्यक संशोधन करके भारत सहित सम्पूर्ण विश्व को सकारात्मक संदेश देकर सभ्यताओं में हो रहे टकरावों को दूर करें।

क्षत विक्षत तन

सत्ता में दुःशासन हैं तो हैं विपक्ष में दुर्योधन।
जाएँ भी तो जायँ कहां श्री विदुर सरीखे विद्वत्जन।
कुर्सी की खातिर कल हिन्दू, हो गये कत्ल कलकता में–
थे मूक बधिर से देख रहे, जो भी हिन्दू थे सत्ता में।
हैं लुटे पिटे से घूम रहे, सारे प्रतिभाशाली सज्जन।
व्यभिचार हो रहे सामुहिक, नारी के संरक्षण घर में।
छोटी छोटी बच्चियाँ भेंट, चढ़ गयी वासना के ज्वर में।
वह नर्क बन गये भवन सभी, जो कभी बने थे शरण–भवन।
लम्बी है जिनकी पहुँच पूँछ, हैं चाटुकार अवसरवादी।
हैं चोर लूटेरे घूम रहे नेता जी बन पहने खादी।
कामान्धों को नहीं दिखती, माँ है बेटी या कि बहन।
महिला ही महिला की दुश्मन, बनती है देखो ठाट यहाँ।
नारी संरक्षण परिसर में, यौवन की रचती हाट यहाँ।
फिर कुत्सित खेल वासना का, कर देता है क्षत विक्षत तन।
अफसर नेता अस्सी प्रतिशत हैं, भ्रष्ट देश के आंगन में।
यह कामवासना के पुतले, अन्धे हों जैसे सावन में।
काले कुबेर वासना के, नेतिकता में सारे निर्धन।
अब बहुत हो चुका त्रिपुरारी प्रकटों प्रकटों बन कर ज्वाला।
इन सभी राक्षसों की प्रभुवर विषमय कर दो जीवन हाला।
कर भी दो इनके अंग यह कर न सके अब शील हरन।

हितेश कुमार शर्मा

देवतास्वरूप भाई परमानन्द की 144 वीं जयन्तीं (4 नवम्बर 2018)

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज से प्राप्त राष्ट्रीय भावना वाले देशभक्त लोगों की नामावली में स्वामी श्रद्धानन्द के साथ यदि और किसी का नाम लिखा जाता है तो वे हैं दयानन्द कालेज लाहौर के भूतपूर्व प्रोफेसर, प्रसिद्ध स्व. भाई परमानन्द एम. ए. उन्होंने इस दिशा में जो अलौकिक कार्य किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। उनका जन्म ४ नवम्बर १८७४ को हुआ था और परलोकगमन ८ दिसम्बर को।

आर्यसमाज की शिक्षण संस्था में अध्यापन–कार्य करते हुए वह आर्यसमाज की ओर से उसके सिद्धान्तों के प्रचारक एक मिशनरी की हैसियत से अफ्रीका गए थे। वहीं से इनके राष्ट्रीय जीवन का अध्याय प्रारम्भ होता है। इनके एक सहयोगी ने इनके राष्ट्रीय जीवन के संस्मरणों को उद्धृत करते हुए लिखा है–" जो कुछ पढ़ने का फल है, वह मेरी समझ में आ चुका है। अंग्रेजों को यहां से निकल जाना चाहिये। उन (भाई जी) की योग्यता को बढ़ाने के लिए कमेटी (डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकत्री सभा) ने उन्हें लंदन में इतिहास के अध्ययन के लिए भेजा। वहां परीक्षा दी, परन्तु कामयाब नहीं हुए। डिग्री तो न लाए, परन्तु १८५७ के विद्रोह पर जो भी पुस्तकें मिल सकीं, वह कालेज (डी. ए. वी. कालेज लाहौर, जिसमें भाई जी इतिहास के प्रोफेसर थे) के लिए ले आए।

भाई परमानन्द ने इसके आधार पर एक पुस्तक लिखी, जो उनके खिलाफ मुकदमें में बरती गई। सरकारी वकील ने कहा:–कि यह क्या बताऊं कि पुस्तक में कौन–सा परिच्छेद आक्षेप के योग्य है, सारी पुस्तक ही राजद्रोह है। भाई परमानन्द विलायत से आते हुए पुस्तकें तो लाये ही थे, साइक्लोस्टाइल पर छपी एक पत्रिका भी लेते आए थे। वह बम बनाने का नुस्खा था। ...भाई जी शहर (लाहौर) में एक मकान की मंजिल में रहते थे। दूसरी मंजिल में स. किशन सिंह (सरदार अजीत सिंह के बड़े भाई तथा अमर शहीद भगत सिंह के पिता) के सम्बन्धियों की रिहायश थी। सन् १९०६ में पुलिस को किसी सम्बंध में स. किशन सिंह के मकान की तलाशी लेनी पड़ी। भाई परमानन्द के मकान की तलाशी की आज्ञा भी प्राप्त कर ली गई। भाई परमानन्द के पास वह नुस्खा पड़ा मिला, जो उनकी वापसी के समय श्याम जी ने जबरदस्ती रख दिया था। श्याम जी कृष्ण जी ने उन्हें अजीत सिंह के लिए पिस्तौल भी दी थी, जो उनके पास ही पड़ी रही। तलाशी में वह नुस्खा पुलिस के हाथ आ गया।..... भाई परमानन्द जी की प्रोफैसरी समाप्त हो गई। अच्छे आचरण के लिए २५,२५ हजार की दो जमानतें उनके दो मित्रों ने दी। भाई जी अमरीका चले गए। वहां से १९१४ में भारत आकर गरीबों की सेवा के उद्देश्य से दवाघर खोला।.... माईकल ओड्वायर पंजाब का गवर्नर था। जब उससे किसी ने भाई परमानन्द का जिक्र किया, तो उसने कहा–कहता है दवाइयां बनाता हूँ, परमात्मा जानता है बनाता क्या है? ...बहुत देर तक हम बातचीत करते रहे। उसी शाम को भाई परमानन्द को पकड़ लिया गया।

भाई जी का मुकदमा एक ट्रिब्यूनल के सामने पेश हुआ। पहले मुकदमे की तरह इसमें भी मैं भाई जी की तरफ से सफाई का गवाह था।... ट्रिब्यूनल के तीन सदस्य थे। दो अंग्रेज, तीसरे पं. शिवनारायण वकील। दोनों अंग्रेजों ने मृत्यु–दण्ड की तजवीज की। पं. शिवनारायण ने उम्र कैद की। मामला वायसराय के पास गया, जिसने आजीवन कैद का आदेश दिया।... अण्डमान द्वीप में, जिसे कालापानी कहा जाता है, वीर सावरकर, भाई परमानन्द के साथ थे। इन दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था। भाई परमानन्द कहते थे कि वीर सावरकर और वह–दोनों विशेष रूप से देखभाल का विषय थे। भाई परमानन्द पर जो गुजरी, उसकी कल्पना कर सकते हैं। पीछे उनकी पत्नी भाग्यसुधी पर जो गुजरी, वह बहुत भिन्न न थी। परन्तु उसने सिर आई को बड़ी हिम्मत से सहन किया। शहर की एक छोटी सी गली में एक छोटा सा कमरा किराये पर लिया और एक कन्या पाठशाला (आर्यसमाज की) में काम करना आरम्भ किया। भाई परमानन्द को १९२६ में रिहा कर दिया गया। भाई प्रमानन्द को पुलिस ने लाहौर रेलवे स्टेशन पर या लाहौरी द्वार के निकट तांगों–इक्कों के अड्डे पर छोड़ दिया। निकट ही आर्यसमाज मन्दिर था। वह वहां गये और एक पुरुष से पूछा कि क्या वह उन्हें भाई परमानन्द के परिवार के निवास स्थान का पता दे सकता है? उनका रूप आकार अजीब सा था, परन्तु पास खड़े एक आदमी ने उन्हें पहचान लिया और वह पूछते–पाछते अपनी पत्नी और बच्चों के पास पहुंच गये।" (आ. स. के त्यागी व तपस्वी सन्त, प्रिं. दीवान चन्द, पृ. ११८–१२३) इसके पश्चात् भाई जी कुछ देर के लिये कांग्रेस में भी शामिल हुए। परन्तु जब वह कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन पर गये, तो वहां एक कमरे में मो. मोहम्मद अली तथा शौकत अली बैठे हुए थे। जब भाई जी वहां बैठने लगे, तो उन्होंने इन्हें वहां न बैठने दिया, क्योंकि उस समय कांग्रेस में उनकी तूती बोलती थी। भाई जी के स्वाभिमानी हृदय को इससे ठेस पहुंची। इस घटना से भाई जी जिस परिणाम पर पहुंचे, उसका वर्णन करते हुए उक्त लेखक अपनी पुस्तक में आगे लिखता है– "भाईजी आर्यसमाज में पले थे, शीघ्र उन्हें यह बात खलने लगी कि कांग्रेस मुसलमानों को खींचने के लिए कई बार हिन्दू–हितों की उपेक्षा ही नहीं करती, उन्हें हानि भी पहुंचाती है। भाई परमानन्द कांग्रेस से अलग हुए तो सदा के लिए अलग हो गए।" (आर्य समाज के त्यागी तपस्वी सन्त, पृ. १२४) भाई जी पर जब १९१४ में षड्यन्त्रकारी होने का मुकदमा चला, तो उनके पास से पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के दो पत्र भी मिले थे, जो कि उन्होंने १९०७ जैसे भयंकर जमाने में भाई जी को लिखे थे। जब स्वातन्त्र्यसंग्राम के अमर योद्धा लाला हरदयाल एम. ए. अमरीका में थे, तब एक बार उनके मन में यह विचार आया कि इन स्वातन्त्र्य–संग्राम के झंझटपूर्ण तथा अशान्तिदायक कार्यों से पृथक हो, किसी नये अध्यात्म–सम्प्रदाय को जन्म दे, वैराग्य–वृत्ति से ही शेष जीवन व्यतीत करना चाहिये और इसके लिए वह शेष पृष्ठ 11 पर

भारतीय पर्व उत्सव धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से दीपावली पर्व

साभार - पुष्कर लाल केडिया की पुस्तक मनीषिका से

भारत के प्रमुख त्योहारों में दीपावली का विशेष स्थान है। इस पर्व में माँ लक्ष्मी का पूजन प्राचीन काल से प्रचलित है। दीपावली आलोक–पर्व है। सभी उम्र के लोग बड़े आनन्द–उल्लास के साथ इसे मनाते हैं। इसका आगमन–काल निकट आते ही घरों की सफाई का कार्य शुरू हो जाता है। घरों के अतिरिक्त कुआँ, तालाब, मन्दिर, चौराहा आदि सार्वजनिक स्थल भी दीपों के प्रकाश से जगमगा उठते हैं। कृषि प्रधान भारत में आज से हजारों वर्ष पूर्व इस उत्सव का प्रचलन ऋतु पर्व के रूप में हुआ था। इस समय तक फसल पककर घरों में आ जाती है और यह उल्लास दीपावली के रूप में फूल पड़ता है। कालक्रमानुसार इस पर्व के साथ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ जुड़ती गई। स्कन्द पुराण, पदम पुराण और भविष्य पुराण में इसके सम्बन्ध में विभिन्न कथाएँ हैं। दीपावली पर लक्ष्मी पूजन क्यों होता है इसका उत्तर हमें प्राचीन ग्रन्थ 'सनत्कुमार संहिता' की उस कथा से मिलता है जिसमें दानवराज बली के कारागार में बन्दिनी लक्ष्मी को वामन रूपधारी भगवान विष्णु द्वारा मुक्त कराने का उल्लेख है। पुराणों में इस रात्रि को 'महारात्रि' कहा गया है और यह मंत्र–तंत्र विद्या की सिद्धि के लिए अद्वितीय मानी गई है। वैदिक साहित्य के अतिरिक्त अन्य प्राचीन भारतीय धर्मों के साहित्य में भी दीपावली की पृष्ठभूमि अलग–अलग रूपों में मिलती है। इस पर्व से जुड़े हुए अन्य प्रमुख पर्व हैं–धन्वन्तरि, त्रयोदशी (धनतेरस), नरक चतुर्दशी, गोवर्धन पूजा तथा भ्रातृ तृतीया (भैया दूज)।

दीपावली पर्व का वैज्ञानिक आधार निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट होता है–

(क) भारतीय पर्व परिवेश स्वच्छता की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। असंख्य दीपों से उत्पन्न होने वाला प्रकाश, वर्षा ऋतु में पैदा होने वाले कीटाणुओं को नष्ट करता है। घरों की सफाई के लिए चूना, नीला थोथा आदि कीटाणुनाशक पदार्थों का प्रयोग सील, दुर्गन्ध और अस्वास्थ्यकर वातावरण को दूर करता है। तेल का धुँआ, जो दीपकों से निकलता है, साँस के जरिये भीतर पहुँचकर मस्तिष्क को पुष्ट करने के साथ ही संक्रामक कृमियों का संहार करता है।

(ख) भारतीय अर्थ–प्रणाली के अनुसार यह आर्थिक वर्ष का प्रथम दिन है। बही खातों को बदलकर, हिन्दु लोग उनका पूजन करके वर्ष भर के आय व्यय का निरीक्षण करते हैं और भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं।

(ग) गोवर्धन पूजा हमें संगठन शक्ति के महत्त्व का बोध कराती है। भगवान श्रीकृष्ण ने इन्द्र (वर्षा के जल) की कृपा पर आश्रित न रहकर, अन्य साधनों का प्रयोग करने के लिए साहस और उद्यम की प्रेरणा देते हुए, ग्वालों को संगठित करके गोवर्धन उठाया (उसे बाँध के रूप में प्रयुक्त किया) और ब्रज भूमि को समृद्ध किया।

(घ) कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भ्रातृ तृतीया (भैया दूज) का पर्व मनाते हैं। यह पर्व भाई–बहन के परिवारों को संयुक्त रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, उनके प्रेम को सुदृढ़ करता है। और हिन्दु परिवारों के संगठन को बल देता है।

दीपावली है लौकिकता और आध्यात्मिकता का अनूठा पर्व

✍ ललित गर्ग

दीपावली का पर्व ज्योति का पर्व है। दीपावली का पर्व पुरुषार्थ का पर्व है। यह आत्म साक्षात्कार का पर्व है। यह हमारे आभा मंडल को विशुद्ध और पर्यावरण की स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश देने का पर्व है। यह अपने भीतर सुषुप्त चेतना को जगाने का अनुपम पर्व है। जिंदगी भी हमसे यही चाहती है कि हम अपने उजाले खुद तय रकें उन पर यकीन रखें। नकारात्मक, अवसाद और तनाव के अंधेरों को हटाकर जीवन को खुशियों के उजास से भरना कोई बहुत कठिन काम नहीं, बशर्ते कि हम जिंदगी की ओर एक विश्वास भरा कदम उठाने के लिए तैयार हो।

इसी विश्वास का जागृत करने का भगवान महावीर ने दीपावली की रात संदेश दिया कि जागो, प्रसाद मत करो क्योंकि प्रसाद में कृत–अकृत से विवेक ही खो जाता है। उन्होंने कहा सोए मन की ऊर्जा का अपव्यय होता है, उपयोग नहीं। इसलिए सोए से जागना जरूरी है। महावीर की यह शिक्षा मानव मात्र के आंतकिरक जगत को आलोकित करने वाली हैं तथागत बुद्ध की अमृत वाणी अप्पदीवो भव अर्थात् आत्मा के लिए स्वयं दीपक बन यह भी इसी भावना को पुष्ट कर रही है। हर रात घर की देहलीज पर दीए की जगमगाहट होती है। हर सुबह सूरज रोशनी के लिए धरती पर उतरता है। फिर भी आश्चर्य होता है कि प्रकाश के बीच खड़ा आदमी स्वयं को अंधेरों में घिरा होने का भ्रम क्यों पालता है? आखिर यह अंधेरा है कैसा? खुली आंखों से सही–सही देख न पाएं तो समझना चाहिए कि यह अंधेरा बाहर नहीं, हमारे भीतर ही कहीं घुसपैठ किये बैठा है और इसलिये भारतीय संस्कृति के संवाहक दीपावली जैसे त्यौहार दीये से दीया जलाने की परम्परा को समृद्ध कर आदमी को अपने भीतर प्रकाश देखने का प्रकाश में होने का विश्वास देते है। यह बात सच है कि मनुष्य का रूझान हमेशा प्रकाश की ओर रहा है। अंधकार को उसने कभी न चाहा न कभी माँगा **'तमसो मा ज्योतिगर्मय'** भक्त की अंतर भावना अथवा प्रार्थना का यह स्वर भी इसका पुष्ट प्रमाण है। अंधकार से प्रकाश की ओर से चल इस प्रशस्त कामना की पूर्णता हेतु मनुष्य ने खोज शुरू की। उसने सोचा कि वह कौन सा दीप है जो मंजिल तक जाने वाले पथ को आलोकित कर सकता है। अंधकार से घिरा हुआ आदमी दिशाहीन होकर चाहे जितनी गति करे, सार्थक नहीं हुआ करती। आचरण से पहले ज्ञान को, चारित्र पालन से पूर्व सम्यक्त्व को आवश्यक माना हैं ज्ञान जीवन में प्रकाश करने वाला होता है। शास्त्र में भी कहा गया–नाणं पयासयरं अर्थात ज्ञान प्रकाशकर है। चाक पर मिट्टी को आकार देते हुए, नहीं में जाल डालते हुए, जंग के मैदारन में तलवार चलाते हुए या गुरू के सम्मुख बैठ किताबों की गंध महसूस करते हुए सुख, संतुष्टि और सत्य को किसी भी क्षण, किसी भी रास्ते पाया जा सकता है। लेकिन इसके लिए प्रयास तो स्वयं को ही करना होता। जिस जीवन की जांच परख न की गई हो, वह जीने योग्य नहीं। जिस जीवन में नींद और जागृति केवल एक परम्परा हो, वो जीने योग्य नहीं, जीने योग्य जीवन यह है, जहां हर एक व्यक्ति अपने जीवन की कहानी का नायक हो। मा ये ठीक वैसा ही है, जैसा दो अलग–अलग दिशाओं में भागते घोड़ों की बग्घी को संभालना, लेकिन अगर रास धमनी आ जाए तो असंभव कुछ भी नहीं।

हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ हैं वह ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है। ज्ञान दुनिया का सबसे बड़ा प्रकाश दीप है। जब ज्ञान का दीप जलता है तब भीतर और बाहर दोनों आलोकित हो जाते हैं। अंधकार का साम्राज्य स्वतः समाप्त हो जाता है। ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता केवल भीतर के अंधकार मोह–मूच्छा

को मिटाने के लिए ही नहीं, अपितु लोभ और आसक्ति के परिणाम स्वरूप खड़ी हुई पर्यावरण प्रदूषण और अनैतिकता जैसी बाहरी समस्याओं को सुलझाने के लिए भी जरूरी है।

आतंकवाद, भय, हिंसा, प्रदूषण, अनैतिकता, ओजोन का नष्ट होना आदि समस्याएं इक्कीसवीं सदी के मनुष्य के सामने चुनौती बनकर खड़ी है। आखिर इन समस्याओं का जनक भी मनुष्य ही तो है। क्योंकि किसी पशु अथवा जानवर के लिए ऐसा करना संभव नहीं है। अनावश्यक हिंसा का जघन्य कृत्य भी मनुष्य के सिवाय दूसरा कौन कर सकता है? आतंकवाद की समस्या का हल तब तक नहीं हो सकता जब तक मनुष्य अनावश्यक हिंसा को छोड़ने का प्रण नहीं करता।

मोह का अंधकर भगाने के लिए धर्म का दीप जलाना होगा। जहां धर्म का सूर्य उदित हो गया, वहां का अंधकर टिका नहीं सकता। एक बारा मोह के अंधकार ने ब्रम्हा जी से शिकायत की कि सूरज मेरा पीछा करता है। वह मुझे मिटा देना चाहता है ब्रम्हा जी ने इस बारे में सूरज को बोला तो सूरज ने कहा– मैं अंध्कार को जनता तक नहीं, मिटाने की बात तो दूर, आज पहले उसे मेरे सामने उपस्थित करें। मैं उसकी शक्त–सूरत देखना चाहता हूं। ब्रम्हाजी ने उसे सूरज के सामने आने के लिए कहा तो अंधकर बोला म उसके पास कैसे आ सकता हूं? अगर आ गया तो मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

हालांकि दीपावली एक लौकिक पर्व है। फिर भी यह केवल बाहरी अंधकार को ही नहीं, बल्कि भीतरी अंध्कार को मिटाने का पर्व भी बने। हम भीतर में धर्म का दीप जजलाकर मोहऔर मूच्छा के अंध ाकार को दूर कर सकते हैं दीपावली के मौके पर सभी आमतौर से अपने घरों की साफ–सफाई, साज–सज्जा और उसे संवारने–निखारने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार अगर भीतर चेतना के आँगन पर जमें कर्म के कचरे को बुहारकर साफ किया जाए, उसे संयम से सजाने–संवारने का प्रयास किया जाए और उसमें आत्म रूपी दीपक की अखंड ज्योति को प्रज्वलित कर दिया जाए तो मनुष्य शाश्वत सुख, शांति एवं आनंद की प्राप्त हो सकता है। महान दार्शनिक संत आचार्य श्री महायज्ञ लिखते हैं–हमें शदि धर्म को भीतर को प्रकाश को समझना है और वास्तव में धर्म करना है तो सबसे पहले इंद्रियों को बंद करना सीखना होगा। आँखें बंद, कान बंद और मुँह बंद ये सब बंद हो जाएँगे तो फिर नाटक या टी.वी. देखने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। नाटक देख्ने की जरूरत उन्हें पड़ती है, जो अंतदर्शन में नहीं जाते। यदि आप केवल आधा घंटा के लिए सारी इंद्रियों को विश्राम देकर बिलकुल स्थिर और एकाग्र होकर अपने भीतर झाँकना शुरू कर दें और इसा नियमित अभ्यास करें तो एक दिन अपको कोई ऐसी झलक मिल जाएगी कि आप रोमांचित हो जाएंगे। आप देखेंगे–भीतर का जगत कितना विशाल है, कितना आनंदमय और प्रकाशमय है। वहां कोई अंधकार नहीं है, कोई समस्या नहीं है। आपको एक दिव्य प्रकाश मिलेगा। एक बहुत पुराना सूत्र है–पूछो एक जवाब जरूर मिलेगा। दस्तक दो, एक द्वार जरूर खुलेगा और आंखे खोलो एक रोशन रास्ता जरूर सामने होगा। प्लाटिनम ने भी तो यही समझाया था, अंतर्मुखी होकर देखो, यदि तुम फिर भी तो यही समझाया था, अंतर्मुखी होकर देखो, शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

हिन्दुत्व कट्टरता का नाम नहीं

- वह उदार है, संकीर्ण नहीं
- वह गतिशील है, जड़वादी नहीं।
- वह मानव को पवित्र मानता है, पापी नहीं।
- वह समदृष्टि रखता है एकांगी नहीं।
- वह कर्म आधारित है, कर्म काण्डी नहीं।
- वह सार्वभौतिक है, क्षेत्रीय नहीं।
- वह एकेश्वरवाद में विश्वास रखता है, शैतान में नहीं।
- वह प्रकृति को सम्मान देता है, शोषक नहीं।
- वह अहिंसावादी है, हिसंक नहीं।
- ईश्वर कण–कण में है, सातवें आसमान पर नहीं।
- वह विज्ञान सम्मत है अंधविश्वास नहीं।

शेष पृष्ठ 6 का

भारत का स्वर्णिम अतीत.......

ऊँचाई है वो इतनी अधिक है इसका अंदाजा हम अंग्रेजों को नहीं लगता।" एक यूरोपीय वैज्ञानिक था कॉपरनिकस, उसके बारे में कहा जाता है कि उसने पहली बार बतपया सूर्य का पृथ्वी के साथ क्या सम्बन्ध है, जिसने पहली बार सूर्य से पृथ्वी की दूरी का अनुमान लगाया और जिसने सूर्य से दूसरे उपग्रहों के बारे में जानकारी सारी दुनियाँ को दी। लेकिन इस कॉपरनिकस की बात को वॉकर ही कह रहा है कि ये असत्य है। वॉकर कहता है कि अंग्रेजों के हजारों साल पहले भारत में ऐसे विशेषज्ञ वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने पृथ्वी से सूर्य की दूरी का ठीक–ठीक पता लगाया है और भारत के शास्त्रों में उसको दर्ज कराया है। यजुर्वेद में ऐसे बहुत सारे श्लोक हैं जिनसे खगोल शास्त्र का ज्ञान मिलता है। कॉपरनिकस का जिस दिन जन्म हुआ था यूरोप में, उससे ठीक एक हजार साल पहले एक भारतीय वैज्ञानिक "श्री आर्यभट्ट जी" ने पृथ्वी और सूर्य की दूरी बिलकुल ठीक ठीक बता दी थी और जितनी दूरी आर्यभट्ट जी ने बताई थी उसमें कॉपरनिकस एक इंच भी इधर उधर नहीं कर पाया। वही दूरी आज अमेरिका और यूरोप में मानी जाती है।

भारत में खगोल विज्ञान इतना गहरा था कि इसी से नक्षत्र विज्ञान का विकास हुआ। भारतीय वैज्ञानिकों ने ही दिन और रात की लंबाई, समय के आंकड़े निकाले हैं और सारी दुनियाँ में उनका प्रचार हुआ है। ये जो दिनों की हम गिनती करते हैं रविवार, सोमवार इन सभी दिनों का नामकरण और अवधि पूरी कीं पूरी महान महर्षि आर्यभट्ट की निकाली हुई है और उनके द्वारां ही ये दिन तय किए हुए हैं। अंग्रेज इस बात को स्वीकार करते हैं कि भारत के दिनों को ही उध ार लेकर हमने संडे, मंडे बनाया है। पृथ्वी अपनी अक्ष और सूर्य के चारों ओर घूमती है ये बात सबसे पहले १०वीं शताब्दी में भारतीय वज्ञज्ञनिकों के द्वारा प्रमाणित हुई है सारी दुनियाँ में। सूर्य के कितने उपग्रह हैं और उनका सूर्य के साथ अन्तरसम्बन्ध क्या है, ये सारी खोज भारत में तीसरी शताब्दी में हुई थी जब दुनियाँ में कोई पढ़ना लिखना की नहीं जानता था।

एक अंग्रेज है 'डेनियल डिफो' वो कहता है कि "भारत के वैज्ञानिक कितने ज्यादा पक्के हैं चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का ठीक ठीक समय बता देते हैं सालों पहले।" १७०८ में ये लंदन की संससद में कह रहा है कि 'मैंने भारत का पंचांग जब भी पढ़ा है मुझे एक प्रश्न का उत्तर कभी नहीं मिला कि भारत के वैज्ञानिक कई–कई साल पहले कैसे पता लगा लेते हैं कि आज चन्द्र ग्रहण पड़ेगा, आज सूर्य ग्रहण पड़ेगा और इस समय पर पड़ेगा और सही–सही उसी समय पर पड़ता है।' इसका मतलब भारत के वैज्ञानिकों की खगोल और नक्षत्र विज्ञान में बहुत गहरी शोध ा है।" भारतीय शिक्षा के बारे में जर्मन दार्शनिक 'मैक्स मूलर' ने सबसे ज्यादा शोध किया है और वो कहता है कि "मैं भारत की शिक्षा व्यवस्था से इतना प्रभावित हूँ, शायद ही दुनियाँ के किसी देश में इतनी सुंदर शिक्षा व्यवस्था होगी जो भारत में है। भारत के बंगाल प्रांत में मेरी जानकारी के अनुसार ८० हजार से ज्यादा गुरुकुल पिछले हजारों साल से सफलता के साथ चल रहे हैं।" एक अंग्रेज शिक्षाशास्त्री, विद्वान है 'लुडलो' वो १८वीं शताब्दी में कह रहा है कि "भारत में एक भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ कम से कम एक गुरुकुल नहीं है और भारत का एक भी बच्चा ऐसा नहीं है कि जो गुरुकुल में पढ़ाई के लिए न जाता हो।"

इसके अलावा एक और अंग्रेज "जी डबलू लिलटनर", कहता है कि मैंने भारत के उत्तर इलाके का सर्वेक्षण किया है और मेरी रिपोर्ट कहती है कि भारत में २०० लोगों पर एक गुरुकुल चलता है। इसी तरह थॉमस मुनरो कहता है कि दक्षिण भारत में ४०० लोगों पर कम से कम एक गुरुकुल भारत में है। दोनों के आंकड़े मिलाने पर भारत में औसत ३०० लोगों पर एक गुरुकुल चलता था और जिस जमाने के ये आंकड़े है तब भारत की जनसंख्या लगभग २० करोड़ थी। अर्थात् सन् १८२२ के आसपास सम्पूर्ण भारत देश में ७३२००० गुरुकल थे। सन् १८२२ में भारत में कुल गाँव भी लगभंग ७३२००० थे, इस प्रकार लगभग हर गाँव में एक गुरुकुल था। वहीं अंग्रेजों के इतिहास से पता चलता है कि सन् १८६८ तक पूरे इंग्लैंड में सामान्य बच्चों को पढ़ाने के लिए एक भी स्कूल नहीं था। हमारी शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों से बहुत आगे थी। सबसे अच्छी बात ये थी कि इन गुरुकुलों को चलाने के लिए कभी भी किसी राजा से कोई दान और अनुदान नहीं लिया जाता था, ये सारे गुरुकुल समाज के द्वारा चलाये जाते थे।" जी.डब्ल्यू. लिटनर की रिपोर्ट कहती है कि १८२२ में सम्पूर्ण भारत में ६७% साक्षरता की दर है। हमारे प्राचीन गुरुकुलों में पढ़ाई का समय होता था सूर्योदय से सूर्यास्त तक। इतने समय में वो १८ विषय पढ़ते, जिसमें वो गणित/वैदिक गणित, खगोल शास्त्र विज्ञान, धातु विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, शौर्य विज्ञान जैसे लगभग १८ विषय पढ़ाये जाते थे। एक अंग्रेज अधिकारी 'पेंडरगास्ट' लिखता है कि 'जब कोई बच्चा भारत में ५ साल, ५ महीने और ५ दिन का हो जाता था बस उसी दिन उसका गुरुकुल में प्रवेश हो जाता था और लगभग १४ वर्ष तक वो गुरुकुल में पढ़ता था। इसके बाद जिसको विशेषज्ञता हासिल करनी होती थी उसके लिए उच्च शिक्षा के केंद्र भी थे। भारत में शिक्षा इतनी आसान है कि गरीब हो या अमीर सबके लिए शिक्षा समान है और व्यवस्था समान है। उदाहरण–भगवान श्रीकृष्ण जिस गुरुकुल में पढ़े थे, उसी में सुदामा भी पढ़े थे, एक करोड़पति का बेटा और एक रोडपति का।" जबकि २००६ तक भारत में सरकार द्वारा लाखों करोड़ों खर्च करने के बाद १३५०० विद्यालय और ४५० विश्वविद्यालय हैं। जबकि १८२२ में अकेले मद्रास प्रांत (उस जमाने का कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु) में ११५७५ विद्वालय और १०६ विश्वविद्यालय थे। इसके बाद मुंबई प्रांत, पंजाब प्रांत और नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर चारों स्थानों को मिला दिया जाए तो भारत में लगभग १४००० विद्यालय और ५००–५२५ विश्वविद्यालय थे। इसमें इंजीनियरिंग, सर्जरी, मैडिसिन, आयुर्वेद, प्रबंधन सबके लिए अलग अलग विद्यालय और विश्वविद्यालय थे। जबकि पूरे यूरोप में 'सामान्य लोगों के लिए शिक्षा व्यवस्था' सबसे पहले इंग्लैंड में १८६८ में आयी। इससे पहले जो स्कूल थे वो सिर्फ राजाओं के बच्चों के लिए थे जो उनके ही महल में चला करते थे। साधारण लोगों को उनमें प्रवेश नहीं मिलता था। यूरोप के दार्शनिकों का मानना है कि आम लोगों को तो गुलाम बन के रहना है उनको शिक्षित होने से कोई फायदा नहीं। अरस्तू और सुकरात दोनों कहते हैं कि "सामान्य लोगों को शिक्षा नहीं देनी चाहिए, शिक्षा सिर्फ राजा और अधिकारियों के बच्चों को देनी चाहिए, इसलिए सिर्फ उनके लिए ही विद्यालय होते थे।"

भारत में कृषि व्यवस्था के बारे में में "लेस्टर" नाम का अंग्रेज कहता है कि भारत में कृषि उत्पादन दुनियाँ में सर्वोच्च है। अंग्रेजों की संसद में भाषण देते समय वो कहता है, भारत में एक एकड़ में सामान्य रूप से ५६ कुंटल धन पैदा होता है। ये उत्पादन औसतन है, भारत के कुछ इलाकों में तो ७०–७५ कुंटल धान होता है और कुछ इलाकों में ४५–५० कुंटल धान पैदा होता है। भारत में एक एकड़ में सामान्य रूप से १२० मीट्रिक टन गन्ना पैदा होता है। कपास का उत्पादन सारी दुनियाँ में सबसे ज्यादा भारत में है।" दुनियाँ ने सन् १७५० में खेती करना भारत से ही सीखा है। इससे पहले ये यूरोप के लोग जंगली फलों और पशुओं को शिकार करके ही हजारों साल यही खाते रहे हैं। हजारों साल तक भारत ने दुनियाँ को चावल, गुड़, दालें उत्पादित करके खिलाई है। और खाने पीने की हजारों चीजें दुनियाँ भर के देश हमसे खरीदते थे और हमें बदले में सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात देते थे।

भारत के लोगों का स्वास्थ्य दुनियाँ में सबसे अद्भुत था क्योंकि यहाँ की चिकित्सा व्यवस्था भी दुनियाँ में सबसे उत्तम थी। हजारों लाखों जड़ी बूटियाँ और सर्जरी की विद्या पूरी दुनियाँ को भारत से ही गयी है। भारत में हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल इन राज्यों में सर्जरी के सबसे बड़े शोध केंद्र चला करते थे। जब दुनियाँ में कोई नहीं जानता था तब आँख में मोतियाबिंद का पहला ऑपरेशन भारत में ही हुआ है। सर्जरी की सबसे आधुनिकम विद्या 'राइनोंप्लासी' का सबसे पहला परीक्षण और प्रयोग भी भारत में ही हुआ है।'इंग्लैंड की 'रॉयल सोसाइटी ऑफ सर्जन' अपने इतिहास में लिखते हैं कि हमने सर्जरी भारत में सीखी है और उसके बाद पूरे यूरोप को हमने ये सर्जरी सिखायी है। आज से १५० वर्ष पहले तक भारत चिकित्सा, तकनीक, विज्ञान उद्योग, व्यापार सबसे दुनियाँ में शीर्ष पर रहा है और इन सबका श्रेय भारत की शिक्षा व्यवस्था को जाता है, जो दुनियाँ में सबसे ऊँची थी। ऐसा दभुत 'हमारा भारत' देश अंग्रेजों के आने से पहले तक था। अंग्रेजों की नीतियों और कानूनों के कारण आज भारत ऐसा देश बन गया है जहाँ भय,भूख, बीमारी, निर्धनता, अन्याय, अपराध, अत्याचार, भ्रष्टाचार व लूट एक ऐसा देश जिसका अपना अस्तित्व संकट में है। इसका एकमात्र कारण है गुलामीी की शिक्षा व्यवस्था।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 2 का **धर्म का प्रतीक.......**

शक्ति को पहचान कर ही घर में स्थापित कर पूजा और दर्शन करने के निर्देश दिए हैं। 'अकाले मरणं नास्ति' अर्थात् शंख के प्रभाव से अकाल मृत्यु नहीं होती। दिन के दूसरे पहर में शंख पूजा करने से धन वृद्धि होती है। चतुर्थ पहर में शंख की पूजा करने से संतान–प्राप्तित होती है। चैतन्यय और प्राण–प्रतिष्ठायुक्त शंख जहाँ रहता है वहाँ दरिद्रता समाप्त हो जाती है। इसके प्रभाव से व्यक्ति के मान–सम्मान में वृद्धि होती है। इसके दर्शन मात्र से ही अभिशाप और दुर्ग्रह के प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। शाकिनी, भूत, बेताल, पिचास और ब्रह्मराक्षंस दूर भाग जाते हैं। शंख के भीतर चांदी का सिक्का अथवा अक्षत अवश्य रखें। फूल अर्पित करें तथा मिश्री का भोग लगाएँ। कमल गट्टे या स्फटिक की माला से नित्य मंत्र जाप करें। शंख जो चैतन्य हो घर के पूजा–स्थान पर चावल की कटोरी के ऊपर इस प्रकार स्थापित करें कि शंख का पूंछ वाला भाग साधक की ओर न रहे। नित्य शुद्ध केसर का टीका लगाएँ तथा धूप–दीप अर्पित करें। इस मंत्र का जाप करें–

'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभाव नमः'।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करसीय पयोनिधा जाताय श्री दक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्री कराय पूज्यायः नमः।।

शेष पृष्ठ 1 का **अमृतसर ट्रेन हादसा जिम्मेदार.........**

रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों की मिलीभगत से तो कई बार ट्रेन २०–२० मिनट तक खड़ी रहती है। कारण यह है कि दिल्ली व लुधियाना से बिना बिल के आने वाला सारा सामान इन फाटकों पर ही उतारा जाता है, जहां पहले से खड़े आटो में लादकर उसे गंतव्य तक पहुंचा दिया जाता है। क्योंकि माल अगर स्टेशन पर पहुंचा तो वहां पर तैनात मोबाइल विंग की टीमें कार्रवाई कर देती हैं। दशहरा होने के कारण तमाम कारोबार बंद थे। यही कारण है कि ट्रेनें फाटक पर धीमी गति से नहीं रुकी, अन्यथा यह हादसा टल सकता था। जीएसटी विभाग के आला अधिकारियों के मुताबिक, रेलवे स्टेशन पर धंधेबाज काफी कम पार्सल उतारते हैं। शिवाला बाग भाइया रेलवे फाटक, मानावाला रेलवे फाटक, जौड़ा फाटक टैक्स चोरी का गोरखधंधा करने वालों के मुख्य अड्डे हैं। लेकिन अधिकारियों की छोटी सी लापरवाही से कितने लोग काल के गाल में समा चुके हैं और जांच के नाम पर अभी तक ढ़ाक के तीन पात ही नजर आ रहे हैं ।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये

द्विवार्षिक..300/- रुपये

आजीवन सदस्य.......................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 8 का **देवतास्वरूप भाई परमानन्द.........**

पूर्ण तैयारी भी कर चुके थे। तब इसी देशभक्त आर्यवीर ने राष्ट्रीयता से पूर्ण उत्तेजनात्मक विचारों की पुट दे उनकी वृत्ति को पुनः स्वातन्त्र्य–संग्राम की ओर मुड़कर राष्ट्रीय क्षेत्र में एक महान् तथा अद्‌भुत कार्य किया था। इतिहास के ये मुंह बोलते तथ्य प्रकट करते हैं कि ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज से स्वाधीनता का मन्त्र सीखकर ही इन वीरों ने सिर पर कफन बांध तथा प्राण हथेली पर धरे हुए थे। परिवारों के प्रबल ममत्व को छोड़कर अण्डमान जैसे सुदूर प्रदेशों में वहां की नरक–तुल्य गन्दी तथा तंग कोठरियों में हथकड़ियों–बेड़ियों से बंधे हुए अपने जीवन के लम्बे हिस्से तिल–तिल कर जलाते, बिताते हुए कैसे उत्कट देशप्रेम का परिचय दिया? वह भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम की एक अमूल्य एवं गौरव स्पद थाती थी। काश! कि आज के इतिहासकार आर्यसमाज के इन गौरवपूर्ण कार्यों का वर्णन कर अपनी लेखनियों को कृतज्ञों की पंक्ति में खड़ा कर पाते।

शेष पृष्ठ 5 का **महाभारत काल के बाद.......**

अन्तर्यामी, सर्वोपरि, विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध परमेश्वर अपनी जीव रूप सनातन आदि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात जिस–जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुणः (अकाय) अर्थात कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता। (सप्तम स.)

प्रेम व समर्पण का मार्ग ही ईश्वर से साक्षात्कार की अनुभूति करा सकता है

हम प्रायः कहते हैं कि हमें ईश्वर की प्राप्ति के लिए ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। किन्तु बिना अनुभव के हम चिन्तन नहीं कर सकते हौं। मन ही सर्वाधिक तीव्रगामी है। विचार ही मन की भक्ति है किन्तु जहाँ मन की सीमा समाप्त होती है वहाँ से परमात्मा की सीमा शुरू होती है। अर्थात जब संसार के भौतिक विचार भक्ति से उपराम होने पर ही उस ईश्वर की अनुभूति होती है। उपनिषदों में कहा गया है कि ईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की और सारी कर्मेन्दियों का रूख बाहर की ओर रखा और स्वयं हमारे भीतर हमारे ह्दय गुहा में छप गया। हमारी सारी उपलब्धियाँ बाहर से प्राप्त होती है। इसलिए हम ईश्वर को बाहर पाना चाहते हैं इस प्रकार ईश्वर की ओर हमारी पीठ हो जाया करती है हम भीतर को छोड़ कर बाहर तलाश करते हैं। जो चीज हमारे जितनी निकट होती है, उसके होने का आभास उतना ही क्षीण होता है। और उसका पता तब चलता है जब वह चीज हमसे दूर हो जाती है। हमने ईश्वर को अपने भीतर होने का बोध खो दिया है। काश हमने कभी परमात्मा को खोया होता तो उसको खोज सकते थे। किन्तु जब हमने उसे खोया ही नहीं तो उसे कैसे और कहाँ खोजें।

इस सन्दर्भ में हमें एक यह बात याद रखनी चाहिए कि परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक प्रबल रचनात्मक शक्ति है। जो अदृश्य है, उसकी शक्ति को ध यान के जरिये निर्विचार होकर हम अपनी अंतर चेतना में अनुभव कर सकते हैं।

श्रध्ये मान्य पाठक जी–यह तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित ग्रन्थों से किंचित मात्र ईश्वर की अनुभूति का संकेत मात्र किया है। रिसीवर जी के पूर्ण ग्रन्थों को पढ़ने से ही पूर्ण रूप से ईश्वर की अनुभूति हो सकती है।

शेष पृष्ठ 9 का **दीपावली है लौकिकता और.........**

यदि तुम फिर भी खुद को सुंदर न पाओ तो वही करो जो एक मूर्तिकार करता है। मानो अपनी मूर्ति को सुंदर बनाने के लिए वो यहां से कुछ काटता है। कुछ वहां विकना करता है। किसी रेखा को हल्की बनाता है तो दूसरी को ज्यादा निखर देता है और इस तरह वह तब तक जुटा रहता है, जब तक कि मूर्ति का चेहरा जीवन की आभा से जगमगा न उठे। इसीलिये मैक्स ने कहा–संघर्ष चाहे खुद से हो या किसी और से जिन्दगी में एक योद्धा की तरह खड़े होने के लिए आत्म–छवि में सुधर सबसे ज्यादा अहम है और केवल मैक्स नहीं, दुनिया के सभी मनोवैज्ञानिक इस बात से इतिफाक रखते हैं कि संघर्ष के बिना जीवन नहीं, लेकिन इस जीवन संघर्ष में यदि व्यक्ति सकारात्मक सोच रखता है तो परिणाम भी सकारात्मक हासल करता है। सफलता, असफलता कुछ और नहीं हमारे विचारों का खेल भर है।

यद्यपि लोक मानस में दीपावली एक सांस्कृतिक पर्व के रूप में अपनी व्यापकता सिद्ध कर चुका है फिर भी वह तो मानना ही होगा कि जिन ऐतिहासिक महापुरुषों एवं ऐतिहासिक घटना प्रसंगों से इस पर्व की महत्ता जुड़ी है वे अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष थे और उनके जीवन की अलौकिक घटनाएं थी। इस दृष्टि से दीपावली पर्व लौकिकंता के साथ–साथ आध्यात्मिकता का अनूठा पर्व है।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

कानपुर में आतंकवादी गिरफ्तार

अखबार मशरिक (१४ सितम्बर) के अनुसार उत्तर प्रदेश पुलिस ने कानपुर से हिज्बुल मुजाहिदीन नामक आतंकी संगठन के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस महानिर्देशक ओम प्रकाश सिंह ने बताया कि एटीएस ने कमर जमान को शिव नगर मोहल्ले से गिरफ्तार किया है। इसके पास से कई दस्तावेज के अतिरिक्त कानपुर मंदिर की तस्वीर और वीडियो बरामद हुए हैं। पूछताछ के दौरान आरोपी ने स्वीकार किया कि आतंकी संगठन ने उसे कुछ मंदिर उड़ाने के लिए भेजा था और गणेश चतुर्थी के मौके पर बमों के धमाके करने वाला था। आरोपी मूलरूप से असम का रहने वाला है। इस वर्ष अप्रैल माह में वो सुरक्षा एजेंसियों के नोटिस में आया था जब उसने सोशल मीडिया में अपना एक चित्र एके–४७ के साथ पोस्ट किया था। आरोपी ने बताया कि कश्मीर में उसका सम्पर्क एक आतंकी ओसामा से हुआ था और उसने उसे आतंकवाद का प्रशिक्षण दिया।

दिल्ली में मदरसे पर हमले का आरोप

अखबार मशरिक (१५ सितम्बर) के अनुसार जाफराबाद में मदरसा आलूम पर कुछ शरारती तत्वों ने आधी रात को हमला करके उसे जलाने का प्रसास किया। मदरसा प्रबंधकों ने एक पत्रकार सम्मेलन में आरोप लगाया कि कुछ शरारती तत्वों ने मदरसा में पेट्रोल डालकर वहां सो रहे बच्चों को जलाकर मारने का प्रयास किया है जिस कारण बच्चे जल गए हैं। पुलिस ने बताया कि मामले की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और जांच की जा रही है। एक अन्य समाचार के अनुसार इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर में कुछ शरारती तत्वों ने कांग्रेस के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष नदीम जावेद पर हमला किया गया है। पुलिस ने बताया कि अभी इस संबंध में जांच की जा रही है।

मुसलमानों को आरक्षण देने की मांग

सियासत (११ सितम्बर) के अनुसार पुणे में मुसलमानों की ओर से एक बड़ी रैली निकाली गई जिसमें मांग की गई कि महाराष्ट्र में मुसलमानों को पांच प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। महिलाएं 'आरक्षण हमारा हक है' के नारे लगा रही थीं। पुणे नगर के गोलीबार मैदान से एक मोर्चा निकाला गया और उन्होंने जिलाधिकारी को एक मांग–पत्र पेश किया जिसमें मांग की गई कि महाराष्ट्र में मुसलमानों को पांच प्रतिशत आरक्षण देने के बारे में उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देश का पालन किया जाए। ज्ञापन में यह भी कहा गया कि हाल ही में उत्तेजित भीड़ ने देश के विभिन्न भागों में ७८ से अधिक निर्दोष मुसलमानों की हत्या की है। इन हत्याओं के आरोपियों को फांसी दी जाए। ज्ञापन में यह भी मांग की गई कि दलित–मुस्लिम समाज को भी दलित उत्पीड़न निरोधक कानून के तहत सरंक्षण दिया जाएगा। जनसभा को सम्बोधित करते हुए समरीन कुरैशी ने कहा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद २२ के तहत मुसलमानों को आरक्षण देना जरूरी है।

फिलिस्तीनी राजदूत को देश छोड़ने का आदेश

इंकलाब (१८सितम्बर) के अनुसार अमेरिका ने फिलिस्तीनी राजदूत को जल्द देश छोड़ने का आदेश दिया है। अमेरिकी सरकार ने राजदूत और उसके परिजनों का वीजा रद्द कर दिया है। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व अमेरिका में फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के दफ्तर को बंद करने का आदेश दिया गया था। पीएलओ की नेता हनान अशरवी ने इसे बदले की कार्रवाई बताया है और कहा कि अमेरिका ने यह फैसला इजरायल के दबाव के तहत किया है। ज्ञातव्य है कि अमेरिका इससे पूर्व संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा फिलिस्तीनी नागरिकों को दी जाने वाली सहायता को बंद कर चुका है।

कबिरा खड़ा बजार में

विपक्ष में पीएम पद के दावेदार?

अगला चुनाव इस बात पर आधरित है कि दावेदार कौन हो। साल २०१६ के चुनाव से पहले ही प्रधानमंत्री कौन हो, इसको लेकर बहस तेज होती जा रही है। एनडीए की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही अगले प्रधानमंत्री होंगे मगर विपक्ष में इसको लेकर कई आवाजें हैं। सबसे पहले कांग्रेस कार्यसमिति ने प्रस्ताव पास कर कहा कि राहुल गांधी ही उनकी तरफ से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। मगर उसके बाद कांग्रेस के तरफ से इस पर थोड़ा संशोधन किया गया। अब कांग्रेस की तरफ से कहा जा रहा है कि अभी विपक्ष का लक्ष्य बीजेपी सरकार को हटाना है पहले ये काम हो जाए फिर आगे बढ़ा जाएगा। इसलिए कांग्रेस की तरफ से पीएम पद के दरवाजे खुले हुए हैं। यह भी कहा गया कि कांग्रेस को कोई भी व्यक्ति प्रधानमंत्री पद के लिए स्वीकार होगा मगर वो आरआरएस का या उसकी विचारधारा से प्रभावित नहीं होना चाहिए। राहुल गांधी की मानें तो २०१६ में कांग्रेस अपनी जीत के लिए आश्वस्त दिख रही है। कांग्रेस को लगता है कि उत्तर प्रदेश में सपा, बसपा और कांग्रेस यदि साथ–साथ हैं तो बीजेपी को काफी मुश्किल होगी। गौरतलब है कि २०१४ में उत्तर प्रदेश के ८० सीटों में से ७० पर बीजेपी जीती थी। यही वजह है कि बीजेपी ने भी अपनी तैयारी कर रखी है और सूत्रों की मानें तो पार्टी उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर अपने सांसदों के टिकट काटने वाली है। राहुल यह भी मानते हैं कि यदि २०१६ में बीजेपी को २७० साटें नहीं मिलती हैं तो मोदी प्रधानमंत्री नहीं बन पाएंगे। यहां तक कि उनकी अपनी पार्टी भी मोदी को स्वीकार नहीं करेगी। राहुल यह भी मानते हैं कि उनके सहयोगी अब उन्हें छोड़ने लगे हैं। शायद उन्हें भनक लग रही है कि अगली बार बीजेपी अच्छा नहीं करेगी। हाल ही में पीडीपी से बीजेपी अलग हो गई तो टीडीपी बीजेपी से और शिवसेना अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर चुकी है। राहुल ने यह भी कहा कि वे किसी भी हालत में प्रधानमंत्री पद आरआरएस के लिए नहीं छोड़ेंगे। अब सबसे बड़ा सवाल उठता है कि यदि राहुल बाकी दलों को स्वीकार नहीं होंगे तो कौन होगा। सबसे पहले नाम आता है मायावती का, जो देश भर में एक दलित नेता के रूप में स्वीकार्य हैं। चार बार देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। प्रशासनिक अनुभव है, अफसरों से काम करवाना जानती हैं। मगर कुछ खामियां भी हैं। और दूसरा, क्या वे गठबंधन को ठीक से चला पाएंगी। मगर यहां भी सवाल उठता है कि क्या कांग्रेस एक दलित को प्रधानमंत्री बनाएगी। हालांकि कांग्रेस दलित को राष्ट्रपति, चीफ जस्टिस और लोकसभा का अध्यक्ष बनावा चुकी है, अब बारी है प्रधानमंत्री की। दूसरा चेहरा है ममता बनर्जी का जो पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री हैं। मजबूत पकड़ है सरकार पर, मगर क्या उन्हें सारे दल स्वीकार करेंगे और दिल्ली की राजनीति का उन्हें उतना अनुभव नहीं है। जो उनके मिजाज हैं, उसमें गठबंधन को चलाना उनके लिए आसान नहीं होगा। तीसरा सबसे बड़ा नाम है शरद पवार का. उनके पक्ष में जो बातें हैं उसमें है उनका भारतीय राजनीति का भरपूर अनुभव। मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्री के रूप में लंबा अनुभव। सबसे कम उम्र में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने। राजनीतिक जोड़तोड़ में माहिर हैं और हरेक पार्टी में उनके दोस्त हैं।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 31 अक्टूबर से 06 नवम्बर 2018 तक

प्राप्तेषु

आर्य प्रतिनिधि सभा,
15–हनुमान रोड,
नई दिल्ली–01

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।